राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

ब्रीदरू इनटु द शैडोज ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

शनिवार, 24 दिसंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 10 अंकः 04 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

सिक्किम में बड़ा सड़क हादसा, सेना का ट्रक खाई में गिरा, 16 जवान हुए शहीद

सिक्किम से एक दुखद घटना सामने आयी है। जहां घने कोहरे के कारण एक सेना की गाड़ी हादसे का शिकार हो गयी। इस दर्दनाक हादसे में सेना के 16 जवान शहीद हो गये और 4 गंभीर रूप से घायल हो गये। हादसा उस वक्त हुआ जब बर्फ से ढ़की सड़क पर गाड़ी को टर्न किया जा रहा था।

यह गाड़ी एक सेना के काफिले का हिस्सा थी और एक चूक के कारण हादसे शिकार हो गयी। उत्तरी सिक्किम के पास एक खड़ी ढलान पर एक वाहन के फिसल जाने से सेना के सोलह जवान शहीद हो गये और चार अन्य घायल हो गए। यह वाहन तीन वाहनों के काफिले का हिस्सा था, जो चटन से सुबह थंगू की ओर बढ़ा था। जेमा के रास्ते में, वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। भारतीय सेना ने एक बयान में कहा ष्एक बचाव अभियान तुरंत शुरू किया गया था, और चार घायल सैनिकों को हवाई जहाज से निकाला गया था। दुर्भाग्य से, तीन जूनियर कमीशंड अधिकारियों और 13 सैनिकों ने दुर्घटना में लगी चोटों के कारण दम तोड़ दिया।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जताया दुख

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हादसे में लोगों की मौत पर शोक व्यक्त किया है। राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा उत्तर सिक्किम में एक सड़क दुर्घटना के कारण भारतीय सेना के जवानों की जान जाने से गहरा दुख हुआ। राष्ट्र उनकी सेवा और प्रतिबद्धता के लिए हृदय से आभारी है। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी संवेदनाएं। जो लोग घायल हुए हैं, उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करते हैं। भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने भी घटना पर दुख जताते हुए लिखा– उत्तरी सिक्किम में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क दुर्घटना में भारतीय सेना के जवानों की जान जाने से दुखी हूं।उनके परिवारों के प्रति गहरी संवेदना। राष्ट्र उनकी निःस्वार्थ सेवा का ऋणी रहेगा। इस हादसे में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

नोएडा : एमबीबीएस में दाखिला दिलाने के नाम पर ठगी, मामला दर्ज

नोएडा। देश के विभिन्न प्रांतों में रहने वाले छात्रों को एमबीबीएस में दाखिला दिलवाने के नाम पर लाखों रुपये की ठगी करने का मामला सामने आया है। इस संबंध में सेक्टर 63 थाना में धोखाधड़ी सहित विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस उपायुक्त (जोन द्वितीय) राम बदन सिंह ने बताया कि दिल्ली निवासी चंद्रशेखर पाठक की बेटी ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) में सफलता हासिल नहीं की थी। कुछ दिन पहले सेक्टर 63 स्थित एक कंसल्टेंट एजेंसी 'करियर जंक्शन' से उन्हें फोन आया और परामर्श के लिए बुलाया गया। चंद्रशेखर पाठक ने कहा कि जब बेटी के साथ वे कंसल्टेंट एजेंसी पहुंचे तो आरोपियों ने उन्हें बताया कि नीट के अंक के आधार पर कोटे से चंडीगढ़ के सरकारी मेडिकल कॉलेज में उनकी बेटी का दाखिला हो जाएगा और इसके लिए 25 लाख रुपये की मांग की गई जिनमें से आठ लाख रुपये उनसे तुरंत मांगे गए।

हालांकि पाठक ने एजेंसी को तीन लाख रुपये दिए और शेष राशि दाखिला होने के वक्त देने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि करियर जंक्शन ने पाठक को एक पत्र दिया था और उन्हें चंडीगढ़ में कॉलेज के बाहर मिलने के लिए कहा था। लेकिन जब वह 20 दिसंबर को चंडीगढ़ पहुंचे तो वहां कोई नहीं मिला। करियर जंक्शन के सभी लोगों के मोबाइल नंबर भी बंद थे। डीसीपी ने बताया कि चंद्रशेखर ने मामले की शिकायत नोएडा पुलिस से की। उन्होंने बताया कि इस संबंध में और भी कई लोगों ने नोएडा पुलिस से एजेंसी के खिलाफ ठगी की शिकायत की है। डीसीपी ने बताया कि इस मामले में पुलिस ने सुनील, जिशान और वैशाली सहित कई लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। उन्होंने बताया कि दिल्ली, हरियाणा, बिहार समेत कई राज्यों के लोगों ने इस मामले की शिकायत की है।

अब्दुल बारी सिद्दीकी जैसे मुसलमान बाई चांस हिंदुस्तान में रह गए हैं: मोहसिन रजा

लखनऊ। राजद के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी के बयान को लेकर बवाल मचा हुआ है। बिहार की सियासत में भाजपा उन पर जबरदस्त तरीके से हमलावर है। तो अब दूसरे राज्यों के नेताओं ने भी उनके बयानों को लेकर उन पर पलटवार करना शुरू कर दिया है। हालांकि, अब्दुल बारी सिद्दीकी ने अपने बयान को लेकर कहा कि अगर इससे किसी को तकलीफ हुई है तो उसके लिए मैं खेद व्यक्त करता हूं। लेकिन राजद नेता इस बात पर कायम रहे की मुस्लिम आबादी देश में महफूज नहीं है। वहीं, भाजपा के वरिष्ठ नेता और उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री मोहसिन रजा ने अब्दुल बारी सिद्दीकी पर बड़ा हमला किया है।

कोरोना संकट के बीच बोले अनुराग ठाकुर सरकार ने उठाए उचित कदम, कांग्रेस क्यों कर रही है विरोध

नई दिल्ली। दुनिया के कई देशों में कोरोना वायरस का खतरा बढ़ता दिखाई दे रहा है। इन सब के बीच भारत सरकार भी सक्रिय हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कोरोनावायरस की वर्तमान स्थिति को लेकर एक बड़ी समीक्षा बैठक की थी। हालांकि, कोरोना वायरस को लेकर देश में राजनीति भी जमकर हो रही है। कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा पर सत्तारूढ़ भाजपा जबरदस्त तरीके से हमलावर है। यह पूरा विवाद तब शुरू हुआ जब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने राहुल गांधी और कांग्रेस को पत्र लिखकर कहा कि कोरोना के

मद्देनजर भारत जोड़ो यात्रा को स्थगित कर दें। हालांकि, कांग्रेस का दावा है कि भाजपा भारत जोड़ो यात्रा से डर गई है और इसलिए इस यात्रा को रोकने के लिए अलग–अलग बहाने ढूंढ रही है। कांग्रेस का दावा है कि भारत जोड़ो यात्रा जारी रहने वाला है। इन सब के बीच केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कांग्रेस पर पलटवार करते हुए पूछा है कि भारत सरकार जो फैसले ले रही है उसका पार्टी विरोध क्यों कर रही हैं? अपने बयान में अनुराग ठाकुर ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा एक महीने से ज्यादा समय से चल रही थी। कौन इससे जुड़ रहा था इससे हमें कोई मतलब नहीं था। उन्होंने कहा कि अगर एक बार फिर दुनियाभर में कोविड का संकट आया है और भारत सरकार ने उचित कदम उठाए हैं तो इसका कांग्रेस पार्टी विरोध क्यों कर रही है? केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि क्या जनता और देश के हित में किसी निर्णय को कांग्रेस कभी स्वीकार नहीं करेगी? क्या गांधी परिवार की जिद्द के आगे पूरा देश नतमस्तक हो जाएगा।

एक दिन में कोरोना के 163 नए मामले

भारत में एक दिन में कोरोना वायरस संक्रमण के 163 नए मामले सामने आने के बाद देश में अभी तक संक्रमित हुए लोगों की संख्या बढ़कर 4,46,76,678 पर पहुंच गई है, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या घटकर 3,380 रह गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से शुक्रवार सुबह आठ बजे जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, महाराष्ट्र में संक्रमण से दो, जबकि दिल्ली में एक और मरीज की मौत के बाद मृतक संख्या बढ़कर 5,30,690 हो गई है। वहीं, संक्रमण से मौत के आंकड़ों का पुनरूमिलान करते हुए केरल ने वैश्विक महामारी से जान गंवाने वाले मरीजों की सूची में छह नाम और जोड़े हैं।

उमर खालिद एक सप्ताह की अंतरिम जमानत पर जेल से रिहा

नयी दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के पूर्व छात्र उमर खालिद को अपनी बहन की शादी में शामिल होने के लिए एक सप्ताह की अंतरिम जमानत मिलने के बाद शुक्रवार को यहां तिहाड़ जेल से रिहा कर दिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। कारागार अधिकारियों के अनुसार, खालिद को शुक्रवार सुबह रिहा किया गया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अमिताभ रावत ने खालिद को जमातन दी थी। खालिद को 23 से 30 दिसंबर तक के लिए जमानत दी गई है। खालिद पर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) और भारतीय दंड संहिता के प्रावधानों के तहत कथित रूप से फरवरी 2020 के दिल्ली दंगों का मुख्य षड्यंत्रकारी होने का मामला दर्ज किया गया था। इन दंगों में 53 लोग मारे गए थे और 700 से अधिक घायल हुए थे। संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) और राष्ट्रीय जनसंख्या पंजी (एनआरसी) के खिलाफ विरोध–प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़क गई थी। दिल्ली पुलिस ने खालिद को सितंबर 2020 में गिरफ्तार किया था।

माकपा सदस्य ने की हिन्दी को उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययन की भाषा न बनाने की मांग

नयी दिल्ली। राज्यसभा में शुक्रवार को मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के एक सदस्य ने मांग की कि हिन्दी को आधिकारिक उद्देश्य तक ही रखा जाए, उसे उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययन की न बनाया जाए। आधिकारिक समिति ने हाल ही में राष्ट्रपति को अपनी 11वीं रिपोर्ट सौंपी है। राष्ट्रपति स्वयं उस प्रदेश से हैं जहां की भाषाई संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार से क्षेत्रीय भाषाएं धीरे धीरे नदारद हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि माकपा सदस्य जॉन ब्रिटस ने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्र है लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम हिन्दी को आधिकारिक उद्देश्य तक रखें, उसे उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययन की न बनाएं।

यूपी सरकार का बड़ा फैसला, ब्रजेश पाठक ने मास्क लगाने के आदेश किए जारी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर उपमुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने नए निर्देश जारी किए थे। उत्तर प्रदेश की सरकार ने बढ़ते मामलों के बीच अस्पतालों में मास्क लगाने को अनिवार्य किया गया है। इस मामले में 22 दिसंबर को स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक ली है। बैठक में तय किया गया कि सभी जिलों में चौकसी बढ़ाई जाएगी। वहीं दुनिया भर में तेजी से फैल रहे कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों से प्रभावित देशों से लौट रहे यात्रियों की जांच की जाएगी। बैठक के बाद उत्तर प्रदेश के लिए अलर्ट घोषित कर दिया गया है।

एयरपोर्ट पर बढ़ेगी चौकसी

इसके साथ ही अब राज्य के एयरपोर्ट पर भी चौकसी बढ़ाई जाएगी। नए आदेशों के मुताबिक संक्रमित देशों से लौटने वाले यात्रियों की जिनोम सिक्वेंसींग कराई जाएगी। जिनोम सिक्वेंसींग कराए जाने के निर्देश जारी कर दिए गए है। इसके जरिए नए वैरिएंट का पता लगेगा। सरकार ने सर्दी जुकाम और कुभार समेत अन्य लक्षणों वाले यात्रियों को चिन्हित करने के निर्देश दिए है।

पंजाब सीमा पर बीएसएफ ने पाकिस्तान ड्रोन को मार गिराया

नयी दिल्ली। दिसंबर पंजाब में शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय सीमा पार कर पाकिस्तान से भारत में प्रवेश कर रहे एक ड्रोन को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने मार गिराया। बीएसएफ के एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अमृतसर सेक्टर में पुलमोरन सीमा चौकी के पास सुबह करीब पौने आठ बजे इस मानवरहित यान का पता चला। प्रवक्ता ने कहा, ''बीएसएफ के जवानों ने ड्रोन पर गोलीबारी की और उसे नीचे गिरा दिया। ड्रोन को जब्त कर लिया गया है। यह पता करने के लिए इलाके में तलाशी की जा रही है कि उसने कहीं कोई खेप तो नहीं गिराया है।'' यह लगातार तीसरा दिन है जब सीमा सुरक्षा बल ने पंजाब में एक ड्रोन को मार गिराया है।

भारत अब रहने लायक नहीं, बेटे–बेटियों को विदेश में रहने को कहा, अब्दुल बारी सिद्दीकी के बयान पर सियासी बवाल

पटना। राजद के वरिष्ठ नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी इन दिनों सुर्खियों में हैं। अब्दुल बारी सिद्दीकी ने मुसलमानों की सुरक्षा को लेकर बड़ा बयान देते हुए अपने बच्चों को विदेशों में ही रहने की सलाह दे डाली। अपने बयान में अब्दुल बारी सिद्दीकी ने कहा कि भारत में अब रहने लायक माहौल नहीं बचा है। उन्होंने अपने बच्चों को विदेश में ही रहकर नौकरी करने और वहा की नागरिकता हासिल करने को कहा। अब्दुल बारी सिद्दीकी को आरजेडी के साथ–साथ जदयू और कांग्रेस का भी समर्थन मिल रहा है। लेकिन, भाजपा अब्दुल बारी सिद्दीकी को जबरदस्त तरीके से घेर रही है। बीजेपी अब्दुल बारी सिद्दीकी के इस बयान को तुष्टिकरण की राजनीति से जोड़ रही है। भाजपा ने तो साफ तौर पर कह दिया है कि अब्दुल बारी सिद्दीकी को पाकिस्तान चले जाना चाहिए। मामला बढ़ने पर अब्दुल बारी सिद्दीकी ने आज एक और बयान दिया। उन्होंने कहा कि आज कल सबसे सस्ती गाली हो गई है कि पाकिस्तान चले जाओ। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान तुम्हारा बाप–दादा होगा हमारा नहीं है। हमारे बाप–दादा भारत में हैं भारत में रहे हैं और हम भी यहीं रहेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मैंने इसे एक कार्यक्रम में कहा था जहां पूर्व न्यायाधीश सहित कई बुद्धिजीवी मौजूद थे। मैंने पूछा था कि अगर छात्रों को यहां अवसर मिलता है, तो वे विदेश क्यों जाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने साफ तौर पर कहा कि कुछ लोग अपने राजनीतिक लाभ के लिए भारत का उपयोग कर रहे हैं। बाजपा का वारः राजद नेता के बयान पर भाजपा के निखिल आनंद ने कहा कि सिद्दीकी का बयान निंदनीय है। उन्होंने आगे कहा कि ये लोग मदरसा संस्कृति से अभी भी बाहर नहीं निकल पाए हैं। ऐसे ही लोग सेक्युलरिज्म व लिबरलिज्म के मुखोटे में राष्ट्रविरोधी व धार्मिक एजेंडा चलाते हैं। सिद्दीकी का बयान आरजेडी की विचारधारा को परिलक्षित करता है। एक और ट्वीट में उन्होंने साफ तौर पर कहा कि नाली के कीड़े नाली में ही जिंदा रहते हैं। जिस व्यक्ति को भारत राष्ट्र और उसके संविधान में आस्था नहीं, देशद्रोही है।

प्राइजमनी हॉकी टूर्नामेंट का शुभारंभ 26 से देश भर से 14 टीमें करेंगी प्रतिभागः डा राजीव रंजन

टूर्नामेंट को आल इंडिया हॉकी से बी ग्रेड है प्राप्त जिले वासियों के लिए विशेष आकर्षण है केंद्र रहता है हॉकी टूर्नामेंट

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर। जिला मुख्यालय के एमएलके पीजी कॉलेज के हाकी मैदान पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय हॉकी टूर्नामेंट का आयोजन 26 दिसंबर से 30 दिसंबर तक किया जाना है। जिसके लिए सभी तैयारियां जोर शोर से की जा रही है। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो जेपी पांडे ने बताया कि वर्ष 1938 में शुरू किया गया महाराजा सर भगवती प्रताप सिंह प्राइज मनी हाकी टूर्नामेंट आज राष्ट्रीय टूर्नामेंट के रूप में परिवर्तित हो चुका है। पिछले 84 वर्षों से लगातार हांकी टूर्नामेंट की इस देश भर से 14 टीमें टूर्नामेंट में अपने हॉकी का जादू दिखाएंगी। जिसमे वर्ष 2021 की विजेता टीम मेकबरन सिंह, करमपुर गाजीपुर तथा उपविजेता स्टार इलेवन बलरामपुर सहित 14 टीमें प्रतिभाग करेंगी। आल इंडिया हॉकी टूर्नामेंट का इतिहास टूर्नामेण्ट की शुरूआत तत्कालीन महाराजा सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह ने अपने पिता महाराजा सर भगवती प्रसाद सिंह की स्मृति में सन् 1938 में किया था जमीदारी उन्मूलन के पूर्व तक टूर्नामेण्ट बलरामपुर राज द्वारा संचालित किया जाता रहा। तत्पश्चात् इसके संचालन का दायित्व नगर के गणमान्य नागरिकों ने सम्माली तथा सन् 1968 तक इसका सफलतापूर्वक संचालन किया। इसके पश्चात् महाराजा सर पाटेश्वरी प्रसाद सिंह द्वारा स्थापित महारानी लाल कुँवर

देश भर से ये 14 टीमें करेंगी प्रतिभाग

1. कमांडेंट, आईटीबीपी, जालंधर 2. सुरजीत कुमार, के.डी. सिंह बाबू सोसाइटी, लखनऊ 3. बृज भूषण शर्मा, करनाल हॉकी क्लब, हरियाणा 4. एस.बी.सिंह, हॉकी क्लब, लखनऊ 5. खेल सचिव, इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट ऑफिस नं. 254–260, अव्वई शनमुगम सलाई रोयापेट्टा, चेन्नई 6. खेल और युवा कल्याण निदेशक, टीटी नगर स्टे सियाम, भोपाल 7. मंडल सचिव, भुसावल, रेलवे अकादमी महाराष्ट्र 8. खेल सचिव, हॉकी अकादमी टीम (पुरुष), गुजरात 9. कमांडिंग ऑफिसर, 5011 एएससी बटालियन, एएससी हॉकी टीम, जालंधर 10. लड़कों के खेल, सिवनी, एमपी 11. मेघबरन सिंह, हॉकी अकादमी, करमपुर, अविहार, गाजीपुर 12. प्रबंधक, स्टार एलेवन, बलरामपुर 13. ओ.आई.सी. कोर ऑफ सिग्नल हॉकी टीम, जालंधर (पंजाब)14. कमांडेंट, सीआईएसएफ, ग्रुप मुख्यालय, चंडीगढ़

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलरामपुर ने इसके आयोजन का दायित्व लिया तथा अभी तक उस दायित्व का निर्वहन नगरवासियों के सहयोग से किया जा रहा है। इस टूर्नामिण्ट में मेजर ध्यानचन्द्र के०डी०सिंह बाबू, अशोक कुमार सहित दर्जनों ओलम्पिक खिलाडियों ने अपने खेल से गरिमा प्रदान की है। प्रतिभाओं का होगा सम्मान आयोजन सचिव डॉ राजीव रंजन ने बताया कि इस वर्ष टूर्नामेंट के समापन के अवसर पर प्रतिभाओं का सम्मान किया जायेगा। जिसमे ओलम्पियन सुबोध खंडेकर, बेटर्न खिलाड़ी जगत नारायण श्रीवास्तव एवं युवा खिलाड़ी शफीकुर्रहमान को विशेष रूप से पुरस्कृत किया जायेगा।

उतरौला में देशी,अंग्रेजी,बीयर मदिरा की दुकानों का हुआ औचक निरीक्षण

जिला आबकारी अधिकारी ने औचक निरीक्षण कर लिया जायजा, दिए आवश्यक निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर। आबकारी आयुक्त उत्तर प्रदेश महोदय के आदेशनुसार उप आबकारी आयुक्त देवीपाटन मंडल के निर्देशन में एवं जिला आबकारी अधिकारी बलरामपुर के पर्यवेक्षण में अवैध निष्कर्षण एवं अवैध शराब के विरूद्ध चलाये जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के अन्तर्गत क्षेत्राधिकारी उतरौला उदय राज सिंह मय पुलिस स्टाफ, क्षेत्रीय आबकारी निरीक्षक उतरौला अलंकार सिंह मय आबकारी स्टाफ द्वारा उतरौला तहसील के विभिन्न स्थानों, उतरौला नंबर दो देशी, उतरौला मॉडल शॉप,उतरौला अंग्रेजी, श्रीदत्तगंज देशी, श्रीदत्तगंज अंग्रेजी, श्रीदत्तगंज बीयर, कपौवा देशी, इटईमैदा अंग्रेजी, गलीबापुर चौराहा देशी, बढ़हराकोट देशी मदिरा की दुकानों का औचक व गहन निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान ओवररेटिंग की जांच, बार कोड व क्यू आर कोड का सघन परीक्षण, स्टॉक रजिस्टर से स्टॉक का मिलान, साफ दृ सफाई, लाइसेंस की जांच, विक्रेता की जांच इत्यादि आवश्यक कार्य किया गया। निरीक्षण के दौरान जहां पर साफकृ सफाई की कमी दिखी वहां सफाई के लिए चेतावनी दी गई। दुकानों पर विक्रेता अपने स्थान पर सही पाया गया। बार कोड क्यू आर कोड भी सही पाया गया तथा दुकान पर कोई अन्य अनियमितता नही पाई गई। उतरौला क्षेत्रीय आबकारी अधिकारी ने लोगों को कच्ची शराब तथा अवैध शराब के निर्माण, बिक्री व तस्करी पर रोक लगाने के लिए विभाग को अवगत कराने को कहा।

परेड की ली सलामी,पीआरवी वाहनों, गैस गोदाम,बैरक का किया निरीक्षण

मेस में बने भोजन की गुणवत्ता को चेक करते हुए सम्बन्धित को दिए गए आवश्यक दिशा–निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह द्वारा पुलिस लाइन चुर्क में शुक्रवार परेड का सलामी ली गई तत्पश्चात परेड का निरीक्षण किया गया। इस दौरान यू0पी0–112 वाहनों की गहनता से चेकिंग की गयी तथा पीआरवी पर तैनात पुलिस कर्मियों से वाहनों में उपलब्ध दंगा नियंत्रणध्सुरक्षा उपकरणों के सम्बंध में जानकारी लेते हुए उनकी चेकिंग की गयी तथा पीआरवी कर्मियों को अपने कर्तव्य के बारे में सजग रहने के लिए निर्देशित किया गया। तदोपरान्त पुलिस अधीक्षक द्वारा गैस गोदाम, बैरक का निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात मेस में बने भोजन को भोजनालय कक्ष में खाकर खाने की गुणवत्ता को चेक किया गया। इस दौरान पुलिस लाइन में बेहतर साफ–सफाई हेतु प्रतिसार निरीक्षक को निर्देशित किया गया। इस मौके पर क्षेत्राधिकारी कार्यालय अमित कुमार, प्रतिसार निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

अमर नाथ शर्मा बने पत्रकार प्रेस एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पत्रकार प्रेस एसोसिएशन के अमर नाथ शर्मा को सोनभद्र का जिलाध्यक्ष बनाया गया व उज्जवल भविष्य की कामना की गई। अमर नाथ शर्मा ने कहा है कि सोनभद्र में पत्रकारों के उत्पीड़न पर हमारा संगठन सदैव उनके हित में उनके साथ रहेगा। शर्मा ने कहा कि मुख्यालय पर बैठक कर जल्द ही जिले की कार्यकारिणी गठित की जायेगी। जिसमें कुछ पत्रकारों को पत्रकार एसोसिएशन के संगठन में कार्य करने हेतु पद दिया जाएगा।

जिले में व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे,सम्मेद शिखर पर्यटन नहीं पवित्र क्षेत्र हो घोषित

दैनिक बुद्ध का सन्देश

ललितपुर। जैन समाज ने वंदनीय तीर्थ सम्मेद शिखर को पर्यटन नहीं पवित्र क्षेत्र घोषित किए जाने की मांग को लेकर अपने व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रखे जिससे लाखों का कारोबार प्रभावित हुआ। दिन भर युवकों ने नारेबाजी कर सरकार को कोसा और कहा हम अपना हक लेकर रहेंगे इसके लिए कितना भी बडा आन्दोलन करना पडे पीछे नहीं रहेगे। आज सुबह से ही नगर के प्रमुख बाजारों में सन्नाटा पसरा रहा। शहर के बाजारों में दुकानें बंद रहने से जहां लोगों को दिक्कतें रही यही नहीं गल्ला मण्डी सराफा बाजार बंद रहने से किसान परेशान रहे। जैन पंचायत के अध्यक्ष अनिल जैन अंचल का कहना है कि झारखण्ड सरकार को अधिसूचना वापस लेना चाहिए। तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर को पर्यटन स्थल घोषित किए जाने वाले निर्णय को झारखण्ड सरकार ने वापिस ले लिया। मुख्यमंत्री झारखण्ड हेमंत सोरेन के अनुसार सम्मेद शिखर की पहिचान तीर्थ स्थल के रूप में ही रहेगी। उक्त निर्णय समूचे जैन समाज द्वारा देश व्यापी प्रदर्शन के चलते लिया गया। उक्त जानकारी देते हुए जैन समाज के मीडिया प्रभारी अक्षय अलया ने बताया कि उक्त निर्णय से जैन समाज में हर्ष माहौल है और इसे अपने आस्था और श्रद्धा की जीत बता रहे है।

नरेंद्र अध्यक्ष, आनंद महामंत्री निर्वाचित

कोषाध्यक्ष पद पर शुरु से ही रही बढ़त, 205 मतों से विजयी हुए हैं मनोज

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। राबर्ट्सगंज कचहरी परिसर स्थित सोनभद्र बार एसोसिएशन सभागार में शुक्रवार को सोनभद्र बार एसोसिएशन वर्ष 2022–23 के लिए कराए गए चुनाव की मतगणना कराई गई।

नरेंद्र कुमार पाठक अध्यक्ष, आनंद कुमार मिश्र महामंत्री व मनोज कुमार मिश्र कोषाध्यक्ष चुने गए। अंत में मुख्य चुनाव अधिकारी सुरेश सिंह ने एल्डर कमेटी चेयरमैन कृपा नारायण मिश्र की मौजूदगी में सभी विजयी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। उधर विजयी पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया एवं मिठाई खिलाकर बधाई दी गई। शांतिपूर्ण मतदान सम्पन्न होने पर मुख्य चुनाव अधिकारी ने सभी का आभार जताया है। बता दें कि कुल 752 मतों की गिनती करनी थी। इसके लिए 100 मतों की गिनती प्रति राउंड में हुई। आठवें राउंड में महज 52 मतों की गिनती हुई। अध्यक्ष व महामंत्री पद पर चौथे राउंड तक कांटे की टक्कर रही। पांचवें राउंड से अध्यक्ष पद पर नरेंद्र कुमार पाठक ने बढ़त बना ली और निकटतम प्रतिद्वंद्वी पूनम सिंह को 30 मतों से पराजित कर दिया। यहीं हाल महामंत्री पद का रहा पांचवें राउंड में आनंद कुमार मिश्र ने बढ़त बना ली और निकटतम प्रतिद्वंद्वी राजीव कुमार सिंह गौतम को 53 मतों से पराजित कर दिया। जबकि कोषाध्यक्ष पद पर शुरू से ही मनोज कुमार मिश्र ने बढ़त बनाए रखी और 205 मतों से भानु प्रताप चौहान को पराजित किया। अध्यक्ष पद पर नरेंद्र कुमार पाठक को 243 मत, पूनम सिंह को 213 मत, हेमनाथ द्विवेदी को 129 मत, मनोज कुमार पांडेय को 108 मत, विजय कृष्ण वर्मा को 24 मत व उमेश मिश्र को 18 मत मिले। इसी प्रकार से महामंत्री पद पर आनंद कुमार मिश्र को 345 मत, राजीव कुमार सिंह गौतम को 292 मत, शारदा प्रसाद मौर्य को 62 मत व अरुण कुमार सिंघल को 42 मत मिले। वहीं कोषाध्यक्ष पद पर मनोज कुमार मिश्र को सर्वाधिक 469 मत मिले, जबकि भानु प्रताप चौहान को महज 264 मत मिले। सर्वाधिक अध्यक्ष व कोषाध्यक्ष पद पर मत निरस्त हुए हैं। जबकि महामंत्री पद पर कम मत निरस्त हुए हैं। इसकी प्रमुख वजह दो प्रत्याशियों को मत देना अथवा किसी को मत न देना रही है। विजयी पदाधिकारियों ने वकीलों से सम्पर्क कर आभार जताया। वहीं मुख्य चुनाव अधिकारी सुरेश सिंह ने भी सकुशल चुनाव संपन्न होने पर सभी के प्रति आभार जताया है।

मिशन शक्ति जागरूकता अभियान' किया गया जागरूक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में मिशन–शक्ति अभियान के अन्तर्गत महिलाओं,बालिकाओं के विरुद्ध घटित होने वाले अपराधों एवं उनके उत्पीड़न की रोकथाम हेतु चलाये जा रहे अभियान मिशन शक्ति के क्रम में जनपद सोनभद्र के समस्त थानों पर गठित एंटी रोमियो टीमों द्वारा अपने–अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत सार्वजनिक स्थानों,प्रमुख चौराहों,कस्बों,प्रमुख बाजारों,मन्दिर,शिवालयों,स्कूल,कॉलेजा,कोचिंग संस्थानों,शापिंग मॉल आदि के आस–पास गश्त,चेकिंग करते हुए महिलाओं व बालिकाओं को आत्मसुरक्षा के लिये जागरुक किया गया तथा उनकी सुरक्षा के सम्बंध में वार्ता कर आवश्यक हिदायत दी गयी। साथ ही समस्त एंटी रोमियों टीमों द्वारा अपने–अपने थाना क्षेत्र अन्तर्गत गांव, कस्बों एवं सार्वजनिक स्थानों, मिशन शक्ति कक्ष पर उपस्थित बालिकाओं,महिलाओं को उच्चाधिकारियों के नम्बर व नारी सुरक्षा,मिशन शक्ति अभियान के तहत हेल्पलाइन नम्बर वीमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 व साइबर हेल्पलाइन 1930 तथा थानों के सीयूजी नम्बर आदि के बारें में विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। इस अवसर पर बिना कारण घूमने वाले लड़कों,शोहदों की चेकिंग कर आवश्यक हिदायत दी गयी।

जिलाधिकारी सुहास एल वाई के नेतृत्व में 19 से 25 दिसंबर तक सुशासन सप्ताह मनाया जायेगा

- उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरूप जनपद गौतम बुद्ध नगर में मनाया जा रहा है सुशासन सप्ताह
- सुशासन सप्ताह के दौरान आज कलेक्ट्रेट सभागार में कार्यक्रम हुआ संपन्न

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गौतम बुद्धनगर। उत्तर प्रदेश शासन की मंशा के अनुरूप जिलाधिकारी सुहास एल वाई के नेतृत्व में जनपद गौतम बुद्ध नगर में 19 से 25 दिसंबर 2022 तक सुशासन सप्ताह मनाया जा रहा है। इसी क्रम में आज जिलाधिकारी सुहास एल वाई की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट के सभागार में सुशासन सप्ताह के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त आईएएस अतुल चतुर्वेदी उपस्थित रहे। जिला अधिकारी के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम मुख्य अतिथि को पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त आईएएस अतुल चतुर्वेदी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार के द्वारा प्रदेश भर में सुशासन के रूप में कार्य किया जा रहा है और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की स्पष्ट मंशा है कि जनपदों में भी सुशासन की स्थापना हो। इसलिए हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि सभी विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए मिलजुल कर कार्य करना चाहिए एवं कार्यालय में आने वाले आगंतुकों के साथ मृदुल व्यवहार करते हुए उनकी समस्याओं का निस्तारण गुणवत्ता एवं समयबद्धता के आधार पर करते हुए उनके हृदय में शासन एवं प्रशासन के कार्य प्रणाली के लिए एक विश्वास की भावना जागरूक करें ताकि माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुरूप शत–प्रतिशत सुशासन की स्थापना हो सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनका संबंधित विभागीय अधिकारियों के द्वारा व्यापक प्रचार–प्रसार कराते हुए पात्र लाभार्थियों तक उनके लाभ पहुंचाने की कार्रवाई की जाए, ताकि आम नागरिकों को शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आसानी के साथ मिलता रहे। जिलाधिकारी सुहास एल वाई ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त आईएएस अतुल चतुर्वेदी को आश्वस्त करते हुए कहा कि आज जो आपके द्वारा मार्गदर्शन किया गया है उसका अधिकारियों एवं कर्मचारियों के माध्यम से पालन कराते हुए जनपद में सुशासन की स्थापना पर विशेष बल दिया जाएगा। इसी प्रकार जनपद में तहसील एवं ब्लॉक स्तर पर भी सुशासन सप्ताह के तहत कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी तेज प्रताप मिश्र, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व वंदिता श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी प्रशासन डॉ नितिन मदान, नगर मजिस्ट्रेट ग्रेटर नोएडा उमेश चंद निगम, नगर मजिस्ट्रेट नोएडा धर्मेंद्र सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी शैलेंद्र बहादुर सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी कुंवर सिंह, जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी हेमंत सिंह, जिला आबकारी अधिकारी राकेश बहादुर सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी चमन शर्मा, मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी अक्षय गोयल तथा अन्य विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। राकेश चौहान जिला सूचना अधिकारी गौतम बुद्ध नगर।

ग्राम पंचायत महदेवा खुर्द में पात्र व्यक्तियों को नहीं मिल पाया आवास,झुग्गी झोपड़ी में रहने को हैं मजबूर

ग्राम प्रधान एंव सिकरेट्री आश्वासन पर गिरा दिया मकान,आवास मिला भी नहीं

राजेश शर्मा/
दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोहास बाजार। सदर विकास खण्ड नौगढ़ के अंर्तगत ग्राम पंचायत महदेवा खुर्द में लोग अभी भी झुग्गी झोपड़ी में रहने को मजबूर हैं।जहाँ केंद्र और प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत पात्र व्यक्तियों को आवास मुहैया कराने के लिए कटिबद्ध है। वहीं गवहीं राजनीति के चलते बहुत से पात्र व्यक्तियों को आवास नहीं दिया गया है। जिससे लोग विकास के इस दौर में अपने आप को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। जिम्मेदारों की निगाह ऐसे व्यक्तियों पर नहीं पड़ रही है। आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत परिवार हैं। जिन्हें अभी भी छत नशीब नहीं हुआ। ग्राम पंचायत महदेवा खुर्द के कई व्यक्तियों के पास रहने के लिए आवास उपलब्ध नहीं है। और कमाई का कोई ऐसा जरिया नहीं है जिससे लोग आवास बना के रह सकें।ग्राम पंचायत के टोला ककोरी निवासी सुनीता पत्नी सुरेंद्र कुमार और सुनीता पत्नी जोगेंद्र कुमार के पास रहने के लिए आवास नहीं है। मजदूरी ही एक सहारा है। लोग फूस के मकान के ऊपर पन्नी लगा कर जीवन कट रहे हैं। इन्होंने बताया कि आवास के लिए कई बार गया। लेकिन वादा के अलावा आश्वासन पर मकान गिरा दिया। लालमन को फूस के मकान में राजनीति के चलते बहुत से पात्र

ग्राम प्रधान, सिकरेट्री व अन्य लोगों से कहा गया लेकिन किसी ने नहीं सुना। मजबूर होकर निवास इसी फूस के मकान में रहना पड़ रहा है। महदेवा खुर्द निवासी हरिश्चंद्र गौतम पुत्र राम अधारे को अभी भी सीमेंट के चद्दर के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। इन्होंने कहा कि कई बार जरूरी कागजात ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत विकास अधिकारी को दिया आवास नहीं मिला। टोला जमडी निवासी सावित्री गौतम पत्नी महंत का बहुत पुराना पक्का मकान था जो जीर्ण शीर्ण अवस्था में हो गया था।जगह जगह मकान गिर रहा था। उक्त व्यक्ति ने दो वर्ष पूर्व आवास के लिए आवेदन किया तो ग्राम प्रधान और ग्राम पंचायत विकास अधिकारी ने कहा कि मकान गिरा दो तुम्हारा आवास आ गया है।उक्त व्यक्ति ने आवास मिला भी नहीं। बहुत शोर शराबा मचाने पर सिकरेट्री ने सीमेंट का चद्दर दिया।तब से अब तक पूरा परिवार उसी में दिन काट रहा है। आवास अभी तक नहीं मिला। इसी टोले के निवासी विन्द्रावती पत्नी राजमन गौतम का भी फूस के मकान में परिवार सहित रह रहे हैं। आभी तक आवास नहीं मिल पाया है। राधेश्याम पुत्र गनपत और इंद्रजीत रहने को मजबूर हैं। क्योंकि उक्त लोगों की माली हालात बहुत खघ्राब होने के वजह से पक्का मकान नहीं बनवा पाए।उक्त लोगों को गवई राजनीति के चलते कोपभाजन का शिकार होना पड़ रहा हैं। जबकि केंद्र और प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत पात्र व्यक्तियों को आवास मुहैया कराने के लिए कटिबद्ध है। वहीं गवहीं व्यक्तियों को आवास नहीं दिया गया है।जिससे लोग विकास के इस दौर में अपने आप को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। जिम्मेदारों की निगाह ऐसे व्यक्तियों पर नहीं पड़ रही है। जहाँ आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत परिवार हैं। जिन्हें अभी भी छत नशीब नहीं हुआ। लोग अभी भी झुग्गी झोपड़ी में रहने को मजबूर हैं।

विशेष टीकाकरण पखवाड़ा में एक भी बच्चा छूटने न पाए: डॉ राजीव कुमार रंजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बांसी/सिद्धार्थनगर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बसंतपुर के अध

ीक्षक डॉ राजीव कुमार रंजन ने आगामी विशेष टीकाकरण पखवाड़ा के दृष्टिगत सर्वे अभियान में सख्ती करते हुए कहा कि कोई भी बच्चा छूटने न पाए। अधीक्षक डॉ राजीव कुमार रंजन ने कहा की ब्लॉक–बांसी में अधीक्षक डॉ राजीव कुमार रंजन के निर्देशानुसार हाई प्रायॉरिटी सेंटर बसंतपुर, चेतिया, एकडेंगवा, गंगुली, कोड़री, मऊ, अर्बन सेंटर में समस्त ए एन एम की ड्यूटी लगा कर सर्वे कराया जा रहा है जो कि माइक्रोप्लान के अनुसार है। शुक्रवार को नगरीय क्षेत्र के सेंटर अर्बन सेंटर और गंगुली के सभी वार्डो में शुरू किया गया हैस इसके अतिरिक्त अन्य सेंटर में भी समस्त गाँवों मे सर्वे किया जाएगास सभी ए एन एम को सख्त निर्देश दिया गया है कि एक भी बच्चा छूटने न पाए ए एन एम के साथ तीन सुपरवाइजर की भी ड्यूटी लगायी गयी है सआगामी विशेष टीकाकरण पखवाड़ा जनवरी, फरवरी, मार्च में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण मे आयोजित होने वाला है। डब्लू एच ओ से मॉनिटर राहुल द्वारा वेरिफिकेशन किया जा रहा है।

ईओ विंध्याचल ने किया रैन बसेरे का निरीक्षण,दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बांसी। ईओ ने किया रैन बसेरे का निरीक्षण किया। बांसी में मुसाफिरों के ठहरने के लिए नगर पालिका बांसी में रैन बसेरा बनाया गया। ठंड में कड़ाके की सर्दी को देखते हुए नगर पालिका बांसी में रैन बसेरे की व्यवस्था की गई जहां पर रात्रि में बाहर से आने वाले मुसाफिर निःशुल्क विश्राम कर सकते हैं। मुसाफिरों का सहारा बना नरकटहा का रैन बसेरा निराला नगर ईओ विंध्याचल ने शुक्रवार को निरिक्षण किया निरीक्षण के दौरान जहां रैन बसेरा में मुसाफिरों को ठंड से बचाने के लिए रैन बसेरा का उपयोग कर सकते हैं। जहां ठंड से बचाव हेतु भरपूर व्यवस्था की गई है जिसकी निरीक्षण शुक्रवार को नगर पालिका के ईओ विंध्याचल ने की जहां सभी व्यवस्था दुरुस्त पाया गया रैन बसेरा के प्रभारी को निर्देश देते हुए कहा कि बिस्तरों के ऊपर चद्दर डालने तथा अलाव जलाने तथा पेयजल,व प्रकाश सहित साफ–सफाई का बेहतर सुविधा देने के लिए समुचित व्यवस्था देनें का निर्देश दिया। इस दौरान अमरेन्द्र कुमार, प्रभारी प्रमोद अग्रहरी,केयर टेकर चौथी लाल मौजूद रहे।

सुशासन सप्ताहःप्रशासन चला गांव की ओर,कार्यशाला का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। सुशासन सप्ताह प्रशासन गांव की ओर के अन्तर्गत जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता एवं अपर जिलाधि

ाकारी (वि0श्रा0) उमाशंकर की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, सहायक निदेशक मत्स्य, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी, तथा अन्य संबधि ात विभाग के अधिकरियों द्वारा अपने–अपने विभाग की योजनाओं के बारे में अवगत कराया। उपस्थित अधिकारिया द्वारा जानकारी दी गयी है कि अधिकतर कार्य आनलाइन पोर्टल द्वारा हो रहा है जिससे कार्यो में पारदर्शिता आयी है। जिला पंचायत राज अधिकारी ने बताया कि ग्राम पंचायातों में पंचायत भवन का निर्माण कराकर वहां पर एक कर्मचारी नियुक्त किया गया है जिससे गांव के पात्र लाभार्थियों को भारत सरकारध्प्रदेश सरकार के योजनाओ की जानकारी दी जाती है तथा उन्हें किसी भी कार्य के लिए दूर जाने की आवश्यकता नही है। जिलाधि ाकारी संजीव रंजन ने बताया कि सुशासन दिवस प्रशासन गांव की ओर दिनांक 19.12.2022 से 25.12.2022 तक मनाया जा रहा है। जिलाधि ाकारी ने कार्यशाला में बताया कि सुशासन दिवस में ऐसे सभी पात्र व्यक्तियों को सरकार द्वारा चलायी जा रही जनकल्याणकारी योजनाओ का लाभ दिया जा रहा है। जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियो को निर्देश देते हुए कहा कि समय से कार्यालय में आकर जनमानस की समस्याओ का समाधान करे तथा क्षेत्र भ्रमण भी करे। किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की समस्या न हो। इस अवसर जिलाधिकारी संजीव रंजन द्वारा उपस्थित अधिकारियोंध्कर्मचारियों को सुशासन दिवस की शपथ दिलायी गयी। मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूँ कि मै प्रदेश में सुशासन के उच्चतम मापदंडों को स्थापित करने के लिए सदैव संकल्पित रहूँगा और शासन को अधिक पारदर्शी, सहभागी, जनकल्याण केंद्रित तथा जबाबदेह बनाने के लिए हर संभव प्रयास करता रहूँगा। प्रदेश के नागरिको के जीवन स्तर में सुधार लाने के लक्ष्य को पाने के लिए सदैव तत्पर रहूँगा। इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त अपर उपजिलाधिकारी सन्त कुमार, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 वी0के0अग्रवाल, जिला विकास अधिकारी शेषमणि सिंह, पी0डी0 नागेन्द्र मोहन राम त्रिपाठी, जिला पंचायत राज अधिकारी आदर्श, जिला समाज कल्याण अधिकारी डा0 राहुल गुप्ता, जिला दिव्यांग जनसश्क्तीकरण अधिकारी एजाजुल हक खान, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी तन्मय, सहायक निदेशक मत्स्य सुमन, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय तथा अन्य जनवद स्तरीय अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

डायट प्राचार्य के निर्देशन में बीईओ डायट मेंटर एआरपी एसआरजी की हुई बैठक

समन्वित प्रयास से ही बनेगा निपुण जनपद : डाइट प्राचार्य

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत निपुण भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बांसी के सभागार में बीईओ डाइट मेंटर ए आर पी, एस आर जी की बैठक डायट प्राचार्य राम मूरत के निर्देशन में संपन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए डायट प्राचार्य ने कहा कि शिक्षकों को मोटिवेट करे सभी लोग समन्वित रूप से टीम भावना के साथ काम करें सकारात्मक रूप से अच्छे काम करने वाले शिक्षकों को पुरस्कृत करें शिक्षक संकुल की बैठकों में सभी महत्वपूर्ण एजेंडा वार बिंदुओं को शिक्षकों के साथ साझा करें जिससे उनका क्रियान्वयन सभी विद्यालयों में हो सके। निरीक्षण का संचालन कर ही विद्यालय

व पर्यवेक्षण का उद्देश्य शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाना होना चाहिए बच्चों का आकलन कर उनके उपचारात्मक शिक्षण हेतु आवश्यक कार्य करें शिक्षकों के साथ योजना बनाकर बुनियादी साक्षरता एवं शिक्षण गतिविधियों को निपुण बनाया जा सकता है। बैठक में निर्धारित लक्ष्य के सापेक्ष सपोर्टिव सुपरविजन, साप्ताहिक कार्यक्रम के संचालन, शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका आदि की उपलब्धता, हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव मनाए जाने, शिक्षक डायरी, शिक्षण योजना दीक्षा पर ट्रेनिंग की स्थिति आदि बिंदुओं की समीक्षा की गई। बैठक में बीईओ कमला प्रसाद महेंद्र कुमार अरुण कुमार बिंदेश्वरी प्रसाद डायट मेंटर मंजुला यादव, सतीश धवन ,महेंद्र कुमार यादव ,प्रतिभा सिंह एआरपी पशुपति नाथ दुबे, प्रमोद त्रिपाठी, शशिकांत त्रिपाठी, विक्रांत त्रिपाठी ,सुरेंद्र प्रसाद, मनोज पांडेय, संघशील बौद्ध मुस्तन सेरुल्लाह रामसेवक गुप्ता प्रेम चंद व अन्य ए आर पी व क्वालिटी क्वार्डिनेटर उपस्थित रहे। बैठक का संचालन डायट मेंटर अनुराग श्रीवस्तव ने किया।

किसानों को खाद न मिलने को लेकर दिया शिकायती पत्र

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। किसानों को खाद न मिलने के संबंध में सहकारी समिति गौरा अलीदापुर तहसील शोहरतगढ़ जनपद सिद्धार्थनगर के रहने वाले मोहित मिश्रा पुत्र विजय शंकर मिश्रा वार्ड नंबर 8 टोला ने शिकायती पत्र देते हुये आरोप लगाया गया की सहकारी समिति गौरा अलीदापुर सहकारी समिति के केंद्र प्रभारी जितेंद्र प्रसाद के द्वारा ग्रामीणों को खाद नहीं दिया जाता इनके द्वारा पूछे जाने पर बताया जाता है की खाद अभी नहीं आया जबकी 7 किलोमीटर के दूरी के लोगों व नेपाल बॉर्डर से सटे लोगो को मालूम हो जाता है और आस पास के लोगो को नहीं मालूम हो पाता है की कब खाद अति है आरोप लगाते हुये कहा की रात में खाद का के वितरण किया जाता है जबकि आसपास के लोगों को खाद ब्लैक में लेना पड़ता है 400 से 500 प्रति बोरी के हिसाब से खाद बांटा जा रहा है आसपास के लोगों को बताते हैं खाद भी नहीं आई इसकी जॉच जरूरी है। साथ ही केंद्र व्यवस्थापक का ट्रांसफर कर नए केंद्र व्यवस्थापक की गठन की जाए।

जिला स्तरीय पोषण समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी

संजीव रंजन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय पोषण समिति बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन द्वारा विगत माह के बैठक की अनुपालन आख्या की समीक्षा की गयी। आंगनबाड़ी केन्द्रो पर शौचालय निर्माण के प्रगति की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी ने संबधित अधिकारी को शेष शौचालयों का निर्माण कार्य पूर्ण कराने तथा शेष आंगनबाड़ी केन्द्रो पर बाला पेंन्टिंग कराने का निर्देश दिया। इसके साथ ही साथ आंगनबाड़ी केन्द्रो के भवन निर्माण के प्रगति की समीक्षा की गयी। जिलाधिकारी ने सीडीपीओ को सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण करने करने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने समस्त सी.डी.पी.ओ. को निर्देश दिया कि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर बच्चों का वजन कराये। गर्भवती महिलाओ को समय से पोषाहार उपलब्ध कराये तथा बच्चों में पुष्टाहार का वितरण कराने का निर्देश दिया। पोषण ट्रैकर पर सभी सूचनाओं को अपलोड कराने का निर्देश दिया। कुपोषित बच्चो को चिन्हित कर पोषित बच्चो की श्रेणी में लाने हेतु तथा अति कुपोषित बच्चों को एनआरसी में भर्ती कराने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि आंगनबाड़ी कार्यकत्री तथा आशा को निर्देश दिया कि एनीमिया ग्रसित बालिकाओ को चिन्हित कर उन्हें आयरन की गोली उपलब्ध कराये। समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारी को निर्देश दिया कि क्षेत्र में भ्रमण करते रहे।

ब्लाक स्तरीय अधिकारियों को आंगनबाड़ी केन्द्रो को गोद लेने हेतु निर्देश दिया। इस बैठक में उपरोक्त के अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी शेषमणि सिंह, पी0डी0 नागेन्द्र मोहन राम त्रिपाठी, डी.सी.एन.आर.एल.एम. योगेन्द्र लाल भारती, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला कार्यक्रम अधिकारी शुभांगी कुलकर्णी, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी सच्चिदानन्द सिंह, समस्त सी0डी0पी0ओ0 व अन्य संबधित अधिकारी उपस्थित थे।

बीआरसी जोगिया में प्रधानाध्यापको की मासिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई

दैनिक बुद्ध का सन्देश

जोगिया/सिद्धार्थनगर। बीआरसी जोगिया के सभागार में खण्ड शिक्षा अधिकारी कुंवर विक्रम पाण्डेय की अध्यक्षता में एआरपी, संकुल व प्रध ाानाध्यापक की मासिक समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में विद्यालयों में निपुण लक्ष्य तथा साप्ताहिक शिक्षण योजना के अनुसार शिक्षण गतिबिधि ायो के संचालन, की चर्चा हुई शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका के उपयोग आदि पर चर्चा हुई जिससे बच्चे अपने कक्षा की दक्षता समय से पूर्ण कर सके व ब्लॉक के सभी विद्यालयों को निपुण किया जा सके। इसके साथ ही कंपोजिट ग्रांट का वरीयता के क्रम में व्यय, व स्कूलों की अन्य समस्यायों पर बिंदुवार समीक्षा की गई। बैठक में एआरपी प्रमोद त्रिपाठी शशिकांत त्रिपाठी व संकुल तथा ई प्रधानाध यापकध्प्रधानाध्यापक पंकज राय, मनीष दूबे, गौरव पांडेय, आशीष त्रिपाठी, सम्राट पाठक ,उत्कर्ष श्रीवास्तव, जितेंद्र वर्मा,रामप्रताप शर्मा, प्रदीप यादव, ध र्मेंद्र श्रीवास्तव, रवींद्र सिंह, नेहा चौध ारी, अनीता, नमिता यादव, सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

सौ दिन की सीख

मसलन, उनका यह कहना कि इंदिरा गांधी या राजीव गांधी ने देश के लिए क्या किया, उसका हर मीटिंग में उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए। बात इस पर होनी चाहिए कि आज क्या करना है और आगे किधर जाना है। क्या इस बात में किसी को शक है कि अभी तक कांग्रेस एक अतीतजीवी पार्टी बनी हुई है? राहुल गांधी ने ...

राहुल गांधी की बातों में अब जमीनी स्पर्श के संकेत मिलते हैं। यह संकेत ग्रहण किया जा सकता है कि सड़कों पर पैदल चलते हुए आम लोगों से उनका जो सीधा संपर्क हुआ है, उससे उन्हें कुछ सीख मिली है। भारत जोड़ो यात्रा में 100 दिन तक आगे बढने के बाद राहुल गांधी एक बदले हुए व्यक्ति नजर आते हैं। उनकी बातों में अब जमीनी स्पर्श के संकेत मिलते हैं। यानी यह संकेत ग्रहण किया जा सकता है कि सड़कों पर पैदल चलते हुए आम लोगों से उनका जो सीधा संपर्क हुआ है, उससे उन्हें कुछ सीख मिली है। एक सवाल पर उनका यह जवाब इसी सीख से निकला कि इस देश में आर्थिक अन्याय हो रहा है। इस हद तक कि बहुसंख्यक जनता– खास कर नौजवान सपने तो देखते हैं, लेकिन इस बात से आगाह रहते हुए कि उन सपनों के पूरा होने की संभावना नहीं है। उम्मीद की जानी चाहिए कि अपनी आगे की यात्रा में राहुल गांधी को यह अहसास भी होगा कि आखिर सपनों पर ये बिजली क्यों गिरी है और इसके लिए कौन–सी नीतियां जिम्मेदार हैं? इस बात के भी संकेत हैं कि उन्हें अपनी पार्टी की कुछ कमजोरियां उन्हें समझ में आई हैं। मसलन, उनका यह कहना कि इंदिरा गांधी या राजीव गांधी ने देश के लिए क्या किया, उसका हर मीटिंग में उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए। बात इस पर होनी चाहिए कि आज क्या करना है और आगे किधर जाना है। क्या इस बात में किसी को शक है कि अभी तक कांग्रेस एक अतीतजीवी पार्टी बनी हुई है? राहुल गांधी ने एक और काबिल–ए–गौर बात कही है। उन्होंने कहा कि भाजपा चाहे जो हो, पार्टी को यह पता है कि वह क्या है और उसे क्या करना है। यह उसकी सफलता का राज है। लेकिन कांग्रेस यह भूल गई है। राहुल गांधी का मानना है कि जिस रोज कांग्रेस को यह मालूम हो जाएगा कि वह क्या है, उस रोज उसकी सफलता की राह निकल आएगी। ये तमाम वो बातें हैं, जिन्हें अब तक कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाले उसके आलोचक कहते रहे हैं। अब राहुल गांधी को इन बातों का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है, तो इसे पार्टी के लिए एक शुभ लक्षण कहा जाएगा। जाहिर है, तो पार्टी की कामयाबी का कोई इंस्टैंट फॉर्मूला नहीं है। लेकिन प्रयासों को सही दिशा मिल जाए, तो फिर फॉर्मूले निकल कर आने लगते हैं।

कांग्रेस की यात्रा और कोरोना प्रोटोकॉल

केंद्र सरकार और सभी राज्यों की सरकारों ने कोरोना के लगभग सारे प्रोटोकॉल वापस ले लिए हैं। अब सार्वजनिक जगहों पर, यहां तक कि विमानों के अंदर भी मास्क लगाने की अनिवार्यता नहीं है। कहीं भी यात्रा करने के लिए वैक्सीन लगाए होने की बाध्यता भी नहीं है और न सामाजिक दूरी रखने की अनिवार्यता है। हालांकि यह सब जब लागू था तब भी कई राज्यों के चुनाव हुए और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व अन्य नेताओं की लाखों लोगों की भीड़ के साथ रैलियां भी हुईं। लेकिन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कांग्रेस पार्टी को चिट्ठी लिख कर कहा है कि कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा में कोरोना प्रोटोकॉल टूट रहा है। उन्होंने लिखा है कि कांग्रेस यह सुनिश्चित करे कि यात्रा में सिर्फ वे ही लोग शामिल हों, जिन्होंने वैक्सीन लगवाई है। साथ ही उन्होंने मास्क और सैनिटाइजर का इस्तेमाल अनिवार्य करने को भी कहा है। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी कहा है कि यात्रा में जुडने और वहां से हटने के बाद लोगों को आइसोलेट किया जाए। अन्यथा यात्रा रोक देने को कहा है। सोचें, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री की इस चिट्ठी का क्या मतलब है? जब देश में कोई प्रोटोकॉल लागू नहीं है तो फिर इस तरह के निर्देश क्यों जारी हुए? सरकार अगर यात्रा रूकवाना चाहती है तो पहले प्रोटोकॉल लागू कर दे। कितनी हैरानी की बात है कि चीन में या जापान, कोरिया, अमेरिका में कोरोना फैल रहा है तो सरकार को सबसे पहले राहुल की यात्रा रूकवाने की सुझी! देश में कहीं भी प्रोटोकॉल लागू करने से पहले सरकार को राहुल की यात्रा की चिंता हुई! यह भी मजेदार है कि दो दिन पहले यानी 19 दिसंबर को ही सरकार ने संसद में बताया कि भारत में कोरोना के एक्टिव केसेज तेजी से घटे हैं और अब मार्च 2020 के बाद सबसे कम केस रह गए हैं। अब अगर दुनिया में केसेज बढने से सरकार चिंता में है तो पहले स्थित की समीक्षा करे और यह देखे कि कौन से प्रोटोकॉल लागू करने या अभी इंतजार करना है। लेकिन उससे पहले ही यात्रा को नोटिस जारी कर दिया गया।

सामयिक : याद आई सिंधिया की डायरी

डिजी यात्रा के जल्दबाजी के इस निर्णय ने देश का नाम खराब किया है। शडिजी यात्राश के सफल होने का भरपूर प्रचार किया जाता और देश की जनता को इसके फायदे बताए जाते। चरणबद्ध तरीके से इसे देश भर में लागू किया जाता। अधिकारी इसी बात की दुहाई दे रहे हैं कि कोविड के बाद यात्रियों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी हुई है। छुट्टियों की भीड़ भी आग में घी डालने का काम कर रही है। ऐसे में ...

विनीत नारायण

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का टर्मिनल 3 भीड़ और अव्यवस्था को लेकर सुर्खियों में है। वहां पर सवारियों की लंबी कतारें और बदहाली के चित्र और वीडियो सोशल मीडिया में कई दिनों से छाए हुए हैं। जैसे ही इस मामले ने तूल पकड़ा तो आनन फानन में नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया हरकत में आए और स्थिति का जायजा लेने अचानक टी 3 पर पहुंच गए। वहां उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों को कई निर्देश दे डाले। यात्रियों को भी भरोसा दिलाया कि स्थिति बहुत जल्द नियंत्रण में आ जाएगी। उनकी इस पहल को देख उनके स्वर्गवासी पिता और केंद्रीय मंत्री माधवराव सिंधिया की श्डायरीय याद आ गई। दरअसल, जब माधवराव सिंधिया 1986–89 तक भारत के रेल मंत्री थे तो मैं रेल मंत्रालय कवर करता था। वहां के वरिष्ठ अधिकारी रेल मंत्री माधवराव सिंधिया की श्डायरीय से बहुत घबराते थे। जब भी कभी सिंधिया अधिकारियों की बैठक लेते थे तो तारीख वाली अपनी छोटी सी श्डायरीय सामने रखते थे। रेल मंत्रालय की तमाम योजनाओं पर जब विस्तार से चर्चा होती थी तो वे अधिकारियों से उस कार्ययोजना के एक चरण का कार्य पूर्ण होने की अनुमानित तारीख तय करते थे। उस तारीख को श्डायरीय में लिख लेते थे और फिर वो महीना और तारीख आने पर उस दिन उन अधिकारियों से उस कार्य की श्अपडेट्य लेते थे। जैसे ही माधवराव सिंधिया श्डायरीय में किसी तारीख के आगे किसी कार्य से संबंधित कुछ लिखते थे, वैसे ही उस कार्य से संबंधित अधिकारियों के पसीने छूट जाते थे। रात–दिन मेहनत करके संबंधित अधिकारी सुनिश्चित कर लेते थे कि वह कार्य निर्धारित तारीख से पहले पूरा हो जाए। वरना मंत्री जी को मुंह दिखाना भारी पड़ जाएगा। लगता है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने पिता का वह गुण उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं किया। इसके हमारे पास अनेक प्रमाण हैं। मेरे सहयोगी पत्रकार रजनीश कपूर ने नागर विमानन निदेशालय (डीजीसीए) और श्नागरिक उड्डयन मंत्रालयय में व्याप्त भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की दर्जनों शिकायतें सप्रमाण ज्योतिरादित्य सिंधिया को भेजी हैं। इन पर आज तक कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई। दिल्ली हवाई अड्डे पर अव्यवस्था फैलने से पहले यदि संबंधित अधिकारी नागरिक उड्डयन मंत्री को सही रिपोर्ट देते तो शायद ऐसा न होता। ज्योतिरादित्य सिंधिया के पास दो–दो मंत्रालयों की जिम्मेदारी है। उन पर भाजपा के सदस्य होने के नाते भी कई जिम्मेदारियां हैं। दोनों जिम्मेदारियों में संतुलन बना कर ही उनको सभी काम कुशलता से करने होंगे। दिल्ली के टी 3 जैसे औचक निरीक्षण उन्हें कई जगह करने होंगे। अपने स्वर्गवासी पिता की तरह उन्हें भी एक श्डायरीय रखनी चाहिए जिससे अधिकारियों की जवाबदेही तय हो सके। दिल्ली हवाई अड्डे की अव्यवस्था को लेकर नागरिक उड्डयन मंत्रालय के नये कार्यक्रम श्डिजि यात्राय को ही लें। कहा जा रहा है कि इस नई व्यवस्था से यात्रियों को सहूलियत मिलेगी। लंबी–लंबी कतारों से मुक्ति मिलेगी। एक ही बार अपनी शक्ल दिखा कर उनकी हवाई यात्रा संबंधी सभी तरह की जानकारी सिस्टम पर दर्ज हो जाएगी। हवाई अड्डे के ई–गेट पर अपना बार कोड वाला बोर्डिंग पास स्कैन करना होगा, जिसके बाद वहां लगे फेशियल रिकग्निशन की मदद से आपकी पहचान की जाएगी। आपके फेस और आपके डॉक्यूमेंट को वेरिफाई किया जाएगा। इसके बाद आप आसानी से ई–गेट के जरिए एयरपोर्ट और सिक्योरिटी चेक से गुजर सकेंगे। डिजी यात्रा का इस्तेमाल करने के लिए आपको श्डिजी यात्राय ऐप डाउनलोड करना होगा। इसके बाद आपको अपनी डीटेल भरनी होगी। आपको अपनी जानकारी आधार बेस वैलिडेशन और सेल्फ इमेज के साथ डालनी होगी। आपके द्वारा दी गई जानकारी को सबसे पहले सत्यापित किया जाएगा। उड़ान से पहले वेब चेकइन करते वक्त आपको अपना टिकट इस ऐप पर अपलोड करना होगा। यह व्यवस्था पूरी तरह से पेपरलेस है। फिलहाल यह सेवा दिल्ली, बेंगलूरू और वाराणसी एयरपोर्ट पर शुरू की गई है, जिसका विस्तार दूसरे चरण में मार्च, 2023 तक हैदराबाद, पुणो, विजयवाड़ा और कोलकाता के एयरपोर्ट पर किया जाएगा। दिल्ली के मुकाबले बेंगलुरू और वाराणसी के हवाई अड्डे छोटे हैं। इसलिए अभी तक वहां से कोई भीड़ और अव्यवस्था की खबर नहीं आई। दिल्ली के टी 3 पर ही ऐसी अव्यवस्था दिखाई दी। जानकारों के अनुसार, यदि इस नई सेवा को लागू करना ही था तो दिल्ली जैसे भीड़भाड़ वाले व्यस्त हवाई अड्डे से शुरु आत नहीं करनी चाहिए थी। यदि किन्हीं कारणों से दिल्ली में ऐसा करना जरूरी था तो दिल्ली के ही छोटे और कम व्यस्त टर्मिनल को चुना जाना बेहतर होता। वहां भी केवल एक या दो गेटों पर ही इसे अनिवार्य करते। यात्रियों की सहायता के लिए एयरपोर्ट पर सहायकों को नियुक्त किया जाना चाहिए था। वो सब किया जाना चाहिए था जो मामले के तूल पकडने पर मंत्री जी के औचक निरीक्षण के बाद तय हुआ। जानकार इस अव्यवस्था को भी नोटबंदी के बाद एटीएम और बैंकों पर लगी लंबी कतारों की तरह मान रहे हैं। डिजी यात्रा के जल्दबाजी के इस निर्णय ने देश का नाम खराब किया है। श्डिजी यात्राय के सफल होने का भरपूर प्रचार किया जाता और देश की जनता को इसके फायदे बताए जाते। चरणबद्ध तरीके से इसे देश भर में लागू किया जाता। अधिकारी इसी बात की दुहाई दे रहे हैं कि कोविड के बाद यात्रियों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी हुई है। छुट्टियों की भीड़ भी आग में घी डालने का काम कर रही है। ऐसे में श्डिजी यात्राय को इस समय लागू करना क्या सही था?

रंगमंच के अग्रदूत इप्टा ने किया रंगमंचीय चेतना का शंघनाद

इंदिरा संगीत विवि से थिएटर में डिप्लोमा कर रहे रंगकर्मी राजेश श्रीवास्तव के सुपुत्र रंगकर्मी गोकर्ी के निर्देशन में कई नाटकों को राष्ट्रीय पहचान मिली । करण खान व ताहिर खान जैसे कई कलाकार छत्तीसगढ़ी फिल्मों में लोकप्रिय हैं । पिछले 4 दशकों में छग इप्टा की रंग यात्रा इप्टा की ही नहीं वरन छग के साथ देश मे सामाजिक चेतना जगाने की दृष्टि एक अनुकरणीय मिसाल के साथ कभी न बुझने ...

विमलशंकर झा

नाट्यशक्ति को शस्त्र और शास्त्र से अधिक प्रभावी मानने वाले भारतेंदु ने कहा है कि नाटक मानवीय चेतना और समाज परिवर्तन का अमोघ अस्त्र है । आज जब राजनीतिक शक्तियां सत्ता के लिए देश के सामाजिक तानबाना और समावेशी समाज को विखंडित करने पर आमादा हैं तो ऐसे विकट और निर्मम दौर में रंगमंच घटाटोप अंधेरे में भाईचारे का अपहरण करने वालों के खिलाफ पंचलैट की तरह अधिक प्रकाशवान दिखाई दे रहा है । इस परिप्रेक्ष्य में इप्टा (इंडियन पीपुल्स थिएटर) की भूमिका पहले से कहीं अधिक असरकारक तो है ही लेकिन चुनौतिपूर्ण भी कम नहीं है । इप्टा के स्थापना दिवस 9 अप्रेल को राजधानी रायपुर से नफरत के खिलाफ मुहब्बत का पैगाम देने निकली देशव्यापी ढाई आखर प्रेम का– सांस्कृतिक यात्रा इप्टा की इस सामाजिक प्रतिबद्धता की प्रमाण है । छत्तीसगढ़ इप्टा की 4 दशकों की संघर्ष यात्रा जितनी सुनहरी है, इसका भविष्य भी उतना ही चमकदार होने की आशा की जा रही है । संस्कृतिकर्मियों ने अपने प्रभावी नाटकों से प्रदेश के साथ देश में रंगमंचीय चेतना तो जगाई ही सैकड़ों प्रतिभाओं को राष्ट्रीय फलक देने के साथ सामाजिक जड़ता के विरुद्ध बिगुल भी फूंका । अविभाजित मध्यप्रदेश में 1980 –82 के दौर में जबलपुर इकाई के रंगकर्मियों के साथ रायपुर भिलाई के रंगकर्मियों की शुरुआती नाट्य सक्रियता के साथ 82 में जबलपुर में हुए मप्र इप्टा के राज्य सम्मेलन में भी यहां की सहभागिता रही थी । हालांकि 85 में राष्ट्रीय इप्टा के पुर्नगठन के पूर्व 82 में रायपुर, भिलाई और बिलासपुर इप्टा का गठन हो चुका था लेकिन सक्रियता यहां पुर्नगठन बाद ही बढ़ी । मप्र इप्टा के अध्यक्ष पुन्नी सिंह महासचिव हिमांशु व रंगकर्मी राजेश जोशी आदि के साथ छत्तीसगढ़ के रंगकर्मियों ने अपनी नाट्य सक्रियता से चमकदार भविष्य के संकेत दिए । वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य के अभ्युदय के साथ छग इप्टा के गठन के बाद रायपुर, भिलाई, बिलासपुर, रायगढ़, अंबिकापुर, डोंगरगढ़, जगदलपुर और चांपा इकाईयों ने अपनी सांस्कृतिक व सामाजिक प्रतिबद्धता तथा नाट्य चेतना से जबदस्त माहौल बनाया । एक से बढ़कर एक नाट्य प्रोडक्शन, प्रस्तुतियों, वर्कशाप, शिविर, राज्य सम्मेलनों, स्थानीय व राष्ट्रीय स्पर्धाओं में सहभागिता से छत्तीसगढ़ इप्टा की पहचान राष्ट्रीय फलक पर बननी शुरु हो गई । सामाजिक व आर्थिक विषमता और राजनीतिक विद्रूपताओं के खिलाफ और सांप्रदायिक सदभाव को जगाते यहां के नाटकों और कई बड़े निर्देशकों के साथ कलाकारों ने राष्ट्रीय स्पर्धाओं व महोत्सवों में शिरकत से देशव्यापी पहचान बनाई । साथ ही अपने राज्य में सामाजिक चेतना के साथ भाईचारे का माहौल व शांति का टापू बनाने में भी अहम किरदार निभाया । इस दौरान रायपुर के राजकमल नायक, मिनहाज हसन, मिर्जा मसूद, भिलाई इप्टा के विभाष उपाध्याय, सुरेश गोंडाले, मणिमय मुखर्जी, राजेश श्रीवास्तव, शरीफ अहमद, पंकज मिश्रा, रितेश मेश्राम,राजेंद्र कपूर, श्रवण, चारु श्रीवास्तव, चित्रांश श्रीवास्तव,रायगढ़ के अजय आठले, विनोद बहिदर,सचिन शर्मा, मधुकर गोरख शर्मा, अरुण दामणकर, मोमिन खान, ऊषा आठले, अनादि आठले,जगदलपुर के मदन आचार्य, विजय सिंह, राजेश संधू, अनिल निखारे, डोंगरगढ़ के राधेश्याम तराने, मनोज गुप्ता,दिनेश चौधीरी, अंबिकापुर के प्रीतपाल सिंह,विजय गुप्त, वेदप्रकाश व अंजनी पांडेय आदि कई नाट्य निर्देशक रंगजगत को दिए । वहीं संतोष झांजी,आशा शर्मा, विनोद बहिदार, राजेश श्रीवास्तव, मणिमय मुखर्जी,अनिता श्रीवास्तव,सुचिता मुखर्जी, राजेंद्र चौबे, रजीव शुक्ला,कमल शर्मा, नीना सरनाइक, साक्षी शर्मा,नीतू जैन,मोनिका आइच जैसे कलाकारों ने अभिनयअदायगी में रंगजगत में अलग पहचान बनाई । छग इप्टा के 2002 में भिलाई में हुए राज्य सम्मेलन के आगाज के बाद कोरबा (05), डोंगरगढ़ (08), रायपुर (012) व रायगढ़ (017) में हुए सम्मेलनों ने प्रदेश में सांगठनिक मजबूती और वैचारिक अलख के साथ रंगमंच को नई ऊंचाई देने में जबरदस्त योगदान दिया ।पिछले 4 दशकों के दौरान छग इप्टा के कई क्लासिक नाटकों रायपुर के निर्देशक राजकमल के राजेश जोशी रचित यम का छाता, मिर्जामसूद के कबीरा खड़ा बाजार में, मिन्हाज के गोड़ के धुर्रा, व भुलवाराम का गमछा तथा सांप्रदायिक सदभाव पर रामलीला, भिलाई इप्टा के बने नाटक मारीच संवाद, अजब न्याय गजब न्याय, 2 पैसे की जन्नत, मैं नरक से बोल रहा हूं, 1 और द्रोणाचार्य, बरगद बरगद कुत्ता, इंस्पेक्टर मातादीन..,यम का छाता, जब मैं सिर्फ..,मोटेराम का सत्याग्रह,, प्लेटफार्म, पंचलैट, थाली का बैगन चोर पुराण, क्षमादान,एक गधे की आत्मकथा, मुर्गीवाला, प्रेमनगर, परतदर परत, डाकघर, डोंगरगढ़ के यम के भाटो, गांधी की यात्रा, रायगढ़ इप्टा के गगन घटा गहरानी आदि कई यादगार नाटकों ने निर्देशकों व कलाकारों को कीर्ति दिलाई । अजय शर्मा, रौशन घड़ेकर, निशा गौतम, राजेश श्रीवास्तव, मणिमय मुखर्जी, खुशबू अग्रवाल, गुरप्रीत, भूमिका, उर्मिला शर्मा, अंकिता अग्रवाल, पूनम साहू, चारु व चित्रांश श्रीवास्तव आदि अनेक प्रतिभावान कलाकारों ने अपनी बेजोड़ प्रतिभा से रंगमंच को नए प्रतिमान दिए । रायगढ़ इप्टा का नेक्स्ट मिलेनियम देशभर में मंचित हुआ तो एनएसडी डायरेक्टर संजय उपाध्याय निर्देशित बकासुर वध को भारत रंग महोत्सव में मंचित होने का गौरव मिला । भिलाई इप्टा में भिलाई को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में रंगकर्मियों के रंगमंचीय सरोकार व प्रतिभा के साथ अदभुत सक्रियता का योगदान रहा । 24 साल से बाल नाट्य शिविर आयोजन यानी लिटिल इप्टा ने बतौर नर्सरी सैकड़ों कलाकारों को पैदा किया तो यहां बीएसपी बहुभाषीय व इंटर कालेज स्कूल आदि नाट्य स्पर्धाओं में 30 साल से मंचन के साथ पुरस्कार व कई बड़े रंकर्मियों को आमंत्रित कर क्लासिक नाटकों का निर्माण कराया गया । एसएमवी गोपाल राजू रचित व के मोहन राव तथा शरीफ अहमद अनुदित इप्टा भिलाई के यादगार नाटक राई के देशभर में सौ मंचन हुए और कटक में हुए अंतराष्ट्रीय नाट्य महोत्सव में 112 प्रतिभागी टीमों के बीच अंतराष्ट्रीय नाट्य प्रतियोगिता कनाडा के लिए चयन का गौरव हासिल हुआ था । इसमें विभाष उपाध्याय, मणिमय मुखर्जी और राजेश श्रीवास्तव ने सरपंच का अपरिवर्तनीय किरदार निभाया था । वहीं यहां के कई कलाकार छालीवुड व टालीवुड से लेकर छालीवुड में छाए हुए हैं । पंकज, रीतेश, नीतू, मोनिका, अनादि मुंबई सीरियलों में कमाल दिखा रहे हैं । पंकज मिश्रा सोनी टीवी के द कपिल शर्मा शो व शैलेश लोढ़ा के वाह वाह क्या बात है के एपिसोड को डायरेक्ट कर चुके हैं । वेब सीरीज सेंडविच और बांबे लायर का डिजाइन व निर्देशन कर बड़े डायरेक्टरों में शुमार हैं । रायगढ़ के अजय उषा आठले के प्रतिभावान पुत्र अनादि आठले को मुंबई में बार्डरलैंड डाक्यूमेंट्री फिल्म के लिए रजतकमल राष्ट्रीय अवार्ड मिल चुका है ।

देश की खुशहाली और विकास के लिए महिलाएं भी पुरुषों के समान कर रही योगदानः शाहीन अंसारी

समाज को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन

लहरपुर देहात (सीतापुर)। बेसिक शिक्षा परिषद तथा सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में ग्रामसभा लालपुर बाजार एवं सिगनापुर में बालिकाओं के विभिन्न मुद्दों पर समाज को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में खंड शिक्षा अधिकारी लहरपुर शाहीन अंसारी उपस्थित हुई। कलाकारों के द्वारा बालिका शिक्षा, समानता का अधिकार, पोषण, सुरक्षा, बाल विवाह, लिंगभेद संवेदीकरण आदि मुद्दों पर कलाकारों के द्वारा गीतों और अभिनय के माध्यम से समाज को जागरूक किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी के आर पी अनवर अली ने अतिथियों का स्वागत किया तथा एआरपी सुरेश कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर उपस्थित अभिभावकों और शिक्षकों को संबोधित करते हुए खंड शिक्षा अधिकारी लहरपुर शाहीन अंसारी ने कहा वर्तमान समय में देश की खुशहाली और विकास के साथ ही सभी क्षेत्रों में महिलाएं पुरुषों के समान योगदान कर रही हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को महिलाओं के विभिन्न मुद्दों पर संवेदनशील होने की आवश्यकता है। महिलाओं और बालिकाओं से संबंधित सरकार द्वारा बहुत सारे कार्यक्रम और कल्याणकारी योजनाएं संचालित है। इसलिए महिलाओं को भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर आगे आने की आवश्यकता है। तब ही महिलाओं के साथ हो रही नाइंसाफी को रोका जा सकेगा। समाजसेवी और शिक्षक ओम प्रकाश मिश्रा ने कहा की लड़कों की तरह लड़कियों को भी उच्च शिक्षा के अवसर प्रत्येक अभिभावक को खुले मन से देने की आवश्यकता है। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। कार्यक्रम में कलाकारों के द्वारा पिंकी स्कूल जाएगी बुनियाद, लड़का लड़की एक समान आदि नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि नाजिम अली, शिक्षक दिव्य कृष्ण मिश्र, मनोज कुमार वर्मा, अल्पना वर्मा, जुबेर वारिस, रामचंद्र वर्मा अल्पना, कृष्णकांत, राधेश्याम, नीता सिंह, संदीप वर्मा, समाजसेवी उत्तम शर्मा, सुनील काका, अशोक वर्मा, कमल किशोर, अल्पना वर्मा, वरिष्ठ अधिवक्ता जेड आर रहमानी आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। ओम कमल इंटर कॉलेज तथा जनता इंटर कॉलेज के बच्चों ने भी अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अंत में उपस्थित जन को महिलाओं के मुद्दे पर इंसाफ करने तथा अधिकारों के प्रति संवेदनशील होने की शपथ ली गई।

पेस संस्थान ने आयोजित किया गया आमना सामना कार्यक्रम

जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि रहे आमना सामना कार्यशाला के मुख्य अतिथि

पहला (सीतापुर)। पेस संस्थान सिधौली एवं अजीम प्रेमजी फाउंडेशन बेंगलुरु के संयुक्त तत्वाधान में विकास खंड पहला के सभागार में विभिन्न स्थानीय हितभागियो एवं समुदाय के साथ आमना सामना कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि एवं जिला निर्माण समिति के अध्यक्ष शिव कुमार गुप्ता, जिला प्रभारी हिंदू युवा वाहिनी केके सिंह, खंड विकास अधिकारी विवेक मणि त्रिपाठी, बीपीएम अनुपम वर्मा, सीडीपीओ प्रतिनिधि बनवारी लाल, प्रधान संघ की अध्यक्ष मीनू वर्मा, स्थानीय समाचार संवाददाता एवं पहला ब्लॉक की 30 ग्राम पंचायतों से आए नागरिक नेता महिला समूह की महिलाएं व समुदाय के सक्रिय सदस्य सहित करीब ढाई सौ लोगों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन संस्था की बीना पांडे द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पेश संस्था के डायरेक्टर टी थॉमसन द्वारा संस्था के कार्यों एवं परियोजनाओं के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। कार्यक्रम में 30 ग्राम पंचायतों के प्रधान वह पंचायत सहायक शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान सभी पंचायतों की प्रमुख समस्याओं को अतिथियों के समक्ष प्रस्तुतीकरण के माध्यम से संस्था कार्यकर्ता हरिओम बाजपेई द्वारा प्रतुतिकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया। साथ ही सभी संबंधित प्रधान और समुदाय द्वारा सहमति प्रदान की गई। जिस पर उपस्थित अतिथि गण द्वारा अपनी सहमति जताते हुए उक्त कार्यों को अति शीघ्र पूरा कराने हेतु अस्वस्थ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आए जिला निर्माण समिति के अध्यक्ष द्वारा विभिन्न पंचायतों के कार्यों को विशेष रुप से पूर्ण करने पर अपनी सहमति दी गई।

साथ ही उन्होंने कहा कि संस्था द्वारा किए जा रहे इस गुप्ता एवं क्षमता वर्धन के कार्य कि वास्तव में सराहना की जानी चाहिए। कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी द्वारा अपने विचारों को रखते हुए बताया गया कि पंचायतों द्वारा विशेष रुप से मिशन कायाकल्प के तहत कार्य को किया जा रहा है परंतु हम विशेष रूप से यहां पर प्रस्तुत किए गए कार्यों को गंभीरता से लेते हुए इनको प्राथमिक स्तर पर पूर्ण करने पर कार्य करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि पंचायत के अंदर होने वाले कार्यों को हम कर सकते हैं परंतु बहुत से कार्य जो कि क्षेत्र पंचायत या जिला पंचायत से होने हैं वह हमारे अंतर्गत नहीं हो सकती। जिनके लिए निर्माण समिति के अध्यक्ष श्री गुप्ता को सहयोग करना चाहिए ताकि कार्यों को बेहतर तरीके से पूर्ण किया जा सके। कार्यक्रम के संचालन में संस्था कार्यकर्ता शैलेंद्र झा और आकांक्षा का विशेष योगदान रहा।

जनता की समस्याओं का निस्तारण धरातल पर कराना सुनिश्चित करें: डीएम

जिलाधिकारी ने ब्लाक ऐलिया के विभिन्न पटलों का किया औचक निरीक्षण, सभी की सेवा पुस्तिका से लेकर स्थापना में रखे दस्तावेजों का किया अवलोकन

इमलिया सुल्तानपुर (सीतापुर)। जिलाधिकारी अनुज सिंह ने ब्लॉक ऐलिया के विभिन्न पटलों का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखीं। स्थापना में उपस्थित ग्राम विकास अधिकारियों की सेवापुस्तिका का अवलोकन किया तथा उनके इन्क्रीमेंट, ए0सी0पी0 एवं जी0पी0एफ0 का भी अवलोकन किया। स्थापना में रखे दस्तावेजों में अंकित विवरण का भी अवलोकन किया। प्रधानमंत्री आवास योजना की जानकारी करते हुये पूछा कि पिछले वर्ष कितने आवास अभी अवशेष हैं, अवशेष आवासों को नियमानुसार पूर्ण करा दिया जाये। मनरेगा से संबंधित फाइलों का अवलोकन करते हुये मास्टररोल की फीडिंग एवं भुगतान की स्थिति की भी जानकारी ली। पंचायत सहायक को दिये गये मानदेय के रजिस्टर को भी चेक किया। उन्होंने हैण्डपम्प रिबोर, विद्यालय कायाकल्प आदि के रजिस्टरों में अंकित विवरण का भी अवलोकन किया। जिलाधिकारी अनुज सिंह ने आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत सुशासन सप्ताह 19 दिसम्बर से 25 दिसम्बर प्रशासन गांव की ओर के तहत ग्राम पंचायत नरवाहनपुर विकास खण्ड एलिया में जनचौपाल लगायी। जिलाधिकारी ने चौपाल में उपस्थित ग्रामीणों से उनकी समस्याओं को सुना एवं सरकार द्वारा चलायी जा रही लाभार्थीपरक योजनाओं की जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा चौपाल में उपस्थित ग्रामीणों को जानकारी दी गयी। जिलाधिकारी ने कहा कि लोगों को ब्लॉक व जिले स्तर पर न दौड़ना पड़े, इसके लिये प्रशासन स्वयं चलकर गांव तक आया है। आप लोग अपनी समस्याओं को अवगत करायें, जिससे आपकी समस्याओं का समाधान ससमय किया जा सके। जिलाधिकारी ने सभी उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि समस्याओं का निस्तारण धरातल पर कराना सुनिश्चित करें। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं की जानकारी जिला समाज कल्याण अधिकारी द्वारा दी गयी। जिसमें 60 वर्ष पेंशन, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह, छात्रवृत्ति, परिवारिक पेंशन आदि योजनाओं की जानकारी दी गयी। परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना की जानकारी ग्रामीणों को दी गयी। परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 ने जानकारी देते हुये कहा कि दिव्यांग लाभार्थियों को प्राथमिकता के आधार पर आवास दिलाये जायेंगे। साथ ही जिला पंचायत राज अधिकारी ने कहा कि जो भी योजनाओं की जानकारी चाहिये, वह पंचायत सहायक के पास उपलब्ध हैं। वहां से सभी जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं एवं ऑनलाइन आवेदन भी किया जा सकता है। ग्रामीणों द्वारा जिलाधिकारी को अवगत कराया गया कि गांव में जो अवैध कब्जे हैं उनको खाली कराया जाये। जिस पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी महोली को निर्देश दिये कि जांच कराते हुये अवैध कब्जे खाली कराये जायें। जिलाधिकारी ने कहा कि जल जीवन मिशन के तहत एक साल में हर घर में पाईप पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जायेगी। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अक्षत वर्मा, उपजिलाधिकारी महोली पूनम भास्कर, जिला समाज कल्याण अधिकारी हर्ष मवार, परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0, डी0सी0 मनरेगा सुशील कुमार श्रीवास्तव, जिला पंचायत राज अधिकारी मनोज कुमार, जिला कार्यक्रम अधिकारी मनोज कुमार राव, जिला प्रोबेशन अधिकारी प्रिया पटेल सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बानई नदी अनौरा में डीएम ने स्थलीय निरीक्षण करके परखी हकीकत

दैनिक बुद्ध का सन्देश

ललितपुर। जिलाधिकारी आलोक सिंह ने विकासखण्ड बिरधा के अंतर्गत ग्राम पंचायत अनौरा में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया, इस अवसर पर कान्हा गौशाला अनौरा का भी उद्घाटन किया तथा बानई नदी जीर्णोद्धार कार्य को देखा,

इस दौरान उन्होंने उच्च प्राथमिक विद्यालय अनौरा में आयोजित बानई नदी पुनर्जीवन महोत्सवध्चौपाल में प्रतिभाग कर ग्रामवासियों की समस्याओं को सुना। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने शिलापट्टिका का अनावरण करते हुए कान्हा गौशाला अनौरा का उद्घाटन किया, निरीक्षण के दौरान बताया गया कि गौशाला में 263 गौवंश संरक्षित हैं, जिनके उचित प्रबंधन एवं ठण्ड से बचाव के निर्देश दिये गए। जिलाधिकारी ने बानई नदी के जीर्णोद्धार कार्य का निरीक्षण किया, मौके पर डीसी मनरेगा द्वारा बताया गया कि नरेगा से पुल का निर्माण, चौकडेम, नदी का गहरीकरण, वृक्षारोपण एवं सड़क निर्माण कराया गया है, ग्रामवासियों द्वारा बताया गया कि गांव में विद्युत आपूर्ति कम है उसपर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए अधि0अभियंता विद्युत को समस्या समाधान के निर्देश दिये। साथ ही ग्रामीणों को विद्युत एवं सिंचाई सम्बंधी समस्याओं के समाधान हेतु विकास भवन स्थित कण्ट्रोलरुम के नम्बर 05176-272022 की जानकारी देते हुए बताया कि समस्या होने पर इस नम्बर पर शिकायत दर्ज करायें,। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार पाण्डेय, डी0सी0 मनरेगा रवीन्द्रवीर यादव, उप निदेशक कृषि संतोष कुमार सविता, खण्ड विकास अधिकारी बिरधा संदीप मिश्रा, ब अन्य सम्बंधित अधिकारी, कर्मचारी व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पुनर्मतगणना का आदेश हाईकोर्ट ने किया खारिज

बिसवां नगर (सीतापुर)। विकासखंड बिसवां के ग्राम पंचायत परसेहरा में चुनाव में धांधली का आरोप के बाद पर उपजिलाधिकारी बिसवां द्वारा 22 दिसंबर को पुनर्मत गणना करवाए जाने के आदेश को हाईकोर्ट ने खारिज कर पुनर्विचार कर निर्णय लेने का आदेश पारित कर दिया। जिस कारण आज होने वाली पुनर्मत गणना आज नहीं हो सकी। प्राप्त जानकारी अनुसार ब्लॉक क्षेत्र के परसेहरा ग्राम पंचायत में हुए चुनाव में हारी प्रत्याशी जैस्मिन पत्नी वसीम ने चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए विजयी प्रत्याशी मो0 कामिल खां के विरुद्ध मत पत्रों की पुनर्मतगणना के लिए उपजिलाधिकारी बिसवां के न्यायालय में बाद प्रस्तुत किया था।

चौधरी चरण सिंह की मनाई गई 121वी जयंती

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। रावटसगंज की स्थित सिंचाई डाक बंगला में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण कर 121वीं जयंती मनाई गई। और चौधरी चरण सिंह को याद किया गया। जयंती में किसान नेता चौधरी यशवंत सिंह ने कहा कि आज 23 दिसंबर को पूरा देश श्किसान दिवसश् मना रहा है। आज के दिन

भारत के पांचवें प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जन्म हुआ था। जिन्होंने किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियों की शुरुआत की थी। भारत सरकार ने वर्ष 2001 में चौधरी चरण सिंह के सम्मान में हर साल 23 दिसंबर को किसान दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। वरिष्ठ नेता रामभरोसे सिंह ने कहा किचौधरी साहब ने सहकारी खेती का विरोध, कृषि कर्ज माफी, कृषि को आयकर से बाहर रखने, किसानों को जोत बही दिलाने, नहर पटरी पर चलने पर जुर्माना वसूलने का ब्रिटिश कानून खत्म करने, कृषि उपज की अंतरराज्यीय आवाजाही पर रोक हटाने और कपड़ा मिलों को 20 प्रतिशत कपड़ा गरीबों लिए बनवाने जैसे शानदार काम किए। पुर्वांचल राज्य जनमोर्चा के महासचिव एड पवन कुमार सिंह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री चौधारी चरण सिंह ने इकोनामिक नाइट मेयर आफ इंडिया समेत कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। चौधरी साहब का मानना था कि ऐसे उद्योग सृजित होने चाहिए, जिनमें श्रम की मांग ज्यादा हो, जिससे अधिक लोगों को रोजगार मिल सके। इस अवसर पर अशोक कुमार कनौजिया, सुनील कुमार सिंह पटेल, दीपनरायण पटेल, प्रदीप चौहान, संदीप जायसवाल, अशोक आदि लोग उपस्थित थे।

गन्ना ढुलाई में प्रयुक्त वाहनों का औचक निरीक्षण कर दिये आवश्यक दिशा निर्देश

सीतापुर। गुरूवार को सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रशासन) लखनऊ आर0पी0 द्विवेदी ने हरगांव स्थित अवध शुगर मिल में गन्ना ढुलाई में प्रयुक्त वाहनों का औचक निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। आरटीओ (प्रशासन) लखनऊ श्री द्विवेदी द्वारा गन्ना ढुलाई का कार्य कर रहे चालकों को कोहरे से बचाव के बारे में भी जानकारी दी गयी। उन्होंने अवध शुगर एनर्जी लिमिटेड के सहयोग से 167 ट्रैक्टर ट्रालियों व 77 ट्रकों में अपने समक्ष रेडियम टेप लगवाकर कुल 244 वाहनों को रवाना किया। उन्होंने कहा कि कोहरा एवं रात के समय सड़क दुर्घटनाओं की सम्भवना 3-4 गुना अधिक होती है। कई बार अंधेरे कोहरे में वाहन में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप न लगे होने के कारण वाहन दूर से दिखाई नहीं देते।

जिससे सड़क दुर्घटना की सम्भवना कई गुना बढ़ जाती है। सड़क दुर्घटनाओं में से लगभग 24 प्रतिशत दुर्घटनाएं खराब मौसम बरसात, धुंध अथवा कोहरे के दौरान होती है इसलिये सड़क पर चलते समय दृश्यता में वृद्धि करने के लिये रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप का प्रयोग एक प्रमुख उपाय है ताकि वाहनों को दूर से देखा जा सके। ट्रैक्टर ट्रालियों व अन्य वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप के प्रयोग से सड़क दुर्घटनाओं एवं इसके फलस्वरूप होने वाले मृत्यु व लगने वाली चोंट में पर्याप्त कमी लायी जा सकती है। ए0आर0टी0ओ0 (प्रशासन) माला बाजपेयी ने बताया कि जनपद की समस्त चीनी मिल में संचालित ट्रैक्टर ट्रालियां व ट्रक इत्यादि के वाहन स्वामियों से अपने वाहनों में रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप अवश्य लगाने की अपील की गयी। ए0आर0टी0ओ0 (प्रवर्तन) संजय गुप्ता ने बताया कि वाइन पर बिना रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप के चालान होने की दशा में दस हजार रूपये का जुर्माना वसूला जाता है। कार्यक्रम में अवध शुगर मिल के अधिकारी शूरवीर सिंह, पंकज मिश्रा आदि मौजूद रहे।

जनसंचार एवं मीडिया प्रबंधन के क्षेत्र में हिण्डाल्को ने लहराया परचम

दैनिक बुद्ध का सन्देश

रेणुकूट/सोनभद्र। विश्व की प्रतिष्ठित एल्युमीनियम उत्पादक

कंपनी हिण्डालको रेणुकूट ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त कर आदित्य बिड़ला ग्रुप का नाम रोशन किया है। हिण्डाल्को को जनसंचार एवं मीडिया प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर फेम (फेडरेशन ऑफ एक्सीलरेटेड एंड मास एम्पावरमेंट) नेशनल अवार्ड प्रदान किया गया है। दिल्ली के होटल लीला में आयोजित समारोह में देश की लगभग 100 से अधिक जानी-मानी प्रतिष्ठित कंपनियों ने प्रतिभाग किया था जिसमें एनटीपीसी, अडानी ग्रुप, वेदांता, रिलायंस, एनसीएल, लैंको, इफको, एचयूएल ने अपनी हिस्सेदारी निभाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत एवं लोकसभा सदस्य राजेन्द्र अग्रवाल ने जनसंपर्क एवं मीडिया प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए हिण्डाल्को के मुखिया एन. नागेश को पुरस्कृत किया एवं भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस मौके पर हिण्डाल्को जनसंपर्क विभाग के प्रमुख यशवंत कुमार भी मौजूद रहे। इस अवसर पर हिण्डाल्को जनसंपर्क विभाग को मीडिया प्रबंधन को लेकर नए कीर्तिमान स्थापित करने एवं जिले से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाने के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य वक्ता नागेश ने हिण्डाल्को की उपलब्धियों को लेकर विस्तार में अपनी बात रखी साथ ही आज के दौर में मीडिया मैनेजमेंट की अहम भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

डीएम ने कस्तूरबा गांधी विद्यालय का किया निरीक्षण

छात्राओं के लिए शीघ्र गीजर, नये बेडसीट एवं कम्प्यूटर लैब की व्यवस्था कराई जायेगीः जिलाधिकारी

हरदोई।जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने आज ब्लाक सुरसा की ग्राम पंचायत गुरूगुज्जा में संचालित कस्तूबा गांधी विद्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने भोजनालय, भोजन कक्ष, पेयजल, विद्युत आदि व्यवस्थाओं को देखा और विद्यालय में छात्राओं के नहाने के लिए गर्म पानी की व्यवस्था न होने पर वार्डन वसुधा को निर्देश दिये कि छात्राओं के नहाने हेतु गर्भ पानी उपलब्ध कराने के लिए दो गीजर लगवायें तथा बन्दर विद्यालय की छत पर न आये इसके लिए चारों को कटीले तार लगवायें।

छात्राओं के विश्राम कक्ष में खराब बेडसीट को देखकर जिलाधिकारी ने कहा कि छात्राओं के लिए नये बेडसीट की शीघ्र व्यवस्था कराई जायेगी।इसके उपरान्त जिलाधिकारी ने कक्षा 6, 7 एवं 8 में अध्ययनरत छात्राओं की क्लास में जाकर शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में जाना तथा छात्राओं से इतिहास, सांइस, गठित एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण आदि के बारे में सवाल पूछे तथा जिन सवालों का जवाब छात्रायें नही दे सकी उन्हें जिलाधिकारी ने एक टीचर के रूप में छात्राओं को सवालों के सही जवाब बतायें। इस अवसर पर कुछ छात्राओं ने आईएएस एवं डाक्टर आदि बनने के लिए क्या करें पूछने पर जिलाधिकारी ने कहा कि अधिकारी, डाक्टर एवं देश का अच्छा नागरिक बनने के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है और उच्चतम शिक्षा, कम्प्यूटर ज्ञान प्राप्त करने के बाद किसी भी पद को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने छात्राओं से कहा कि सफलता लगन, समपर्ण, कड़ी मेहनत और असफलता से सीख लेकर मिलती है इसलिए अपने माता-पिता एवं शिक्षकों के बताये मार्ग पर चलकर पढ़ाई के साथ खेलकूद, संगीत, कला, नृत्य आदि विधिओं में भी अपना कैरियर बनाने का प्रयास करें और एक अच्छी बेटी, बहन एवं देश की नागरिक बनकर जनपद, प्रदेश तथा देश का नाम रोशन करें।

जिलाधिकारी ने छात्राओं से कहा कि वर्तमान में फिर से कोरोना लहर की सम्भावना को देखते हुए सर्तकता बरते और मास्क लगाकर ही भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जाये तथा और लोगों को भी सावधानी बरतने की सलाह दें।

निरीक्षण में कम्प्यूटर लैब न होने पर जिलाधिकारी ने कहा कि विद्यालय के ऊपर 25 बाई 25 का हाल का निर्माण कराकर कम्प्यूटर लैब संचालित कराया जायेगा। उन्होने छात्राओं से विद्यालय में मिलने वाले नाश्ता, भोजन आदि के बारे में पूछा तथा वार्डन एवं रसोईयों को निर्देश दिये कि छात्राओं को प्रत्येक दिन निर्धारित रोस्टर के अनुसार नास्ता एवं भोजन उपलब्ध कराने के साथ नियमित स्वास्थ्य परीक्षण करायें।

अनुपस्थित मिलने पर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को हटाने का निर्देश

महराजगंज। मुख्य विकास अधिकारी गौरव सिंह सोगरवाल ने सदर ब्लॉक के ग्राम बांसपार बेजौली का निरीक्षण किया। आंगनबाड़ी केंद्र के निरीक्षण में अनुपस्थित मिलने पर कार्यकर्ता को हटाने का निर्देश बाल विकास परियोजना अधिकारी को दिया। वहीं परिषदीय विद्यालयों बदहाल व्यवस्था पाए जाने पर सुधार की चेतावनी दी। उन्होंने मनरेगा पार्क के निरीक्षण के दौरान कहा कि जो भी विकास कार्य अधूरे हैं, उन्हें जल्द से जल्द पूरा कराने का कार्य किया जाए। युवाओं को खेलकूद से जोड़ने की पहल हो। रिसोर्स रिकवरी सेंटर के निर्माण को भी तीव्र गति से पूरा कराने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान प्रशिक्षु उप जिलाधिकारी अमित गुप्ता, बाल विकास परियोजना अधिकारी विजय प्रसाद चौधरी व जिला समन्वयक संतोष शुक्ला आदि मौजूद रहे।

समय से गन्ना मूल्य भुगतान करें चीनी मिलः एडीएम

कुशीनगर। अपर जिलाधिकारी (विध्रा) देवी दयाल वर्मा की अध्यक्षता में जिला गन्ना अधिकारी एवं जनपद के समस्त सचिवों व चीनी मिल के प्रधान प्रबन्धकों, अध्यासी की एक आवश्यक बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में समानुपातिक गन्ना खरीद, घटतौली पर नियंत्रण करने एवं गन्ना मूल्य भुगतान समयान्तर्गत करने की समीक्षा की गयी। समीक्षा में पाया गया कि चीनी मिल हाटा, रामकोला तथा खड्डा द्वारा 14 दिन पूर्व का देय गन्ना मूल्य का शत–प्रतिशत भुगतान कर दिया गया है। चीनी मिल सेवरही द्वारा मात्रा 67.12 प्रतिशत ही गन्ना मूल्य का भुगतान किया गया है। अपर जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि समानुपातिक गन्ना खरीद एवं घटतौली नियंत्रण पर कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

जुआड़खाने में छापामारी कर पुलिस ने छह जुआरी पकड़े

महोबा। पुलिस अधीक्षक सुधा सिंह के निर्देशन पर जिले में अवैध रुप से संचालित हो रहे जुआ, सट्टा के प्रति चलाये जा रहे सघन चेकिंग व गिरफ्तारी अभियान के क्रम में थानाध्यक्ष खरेला गणेश कुमार द्वारा गठित टीम में शामिल उपनिरीक्षक शिवकुमार यादव द्वारा टीम के साथ महेन्द्र लोधी पुत्र रामसनेही, वीरेंद्र यादव पुत्र घनश्याम यादव, देवेंद्र लोधी पुत्र ढालचंद्र, मंगल सिंह राजपूत पुत्र जगमोहन, गुलाब सिंह पुत्र रामसनेही, अमित राजपूत पुत्र राजेन्द्र राजपूत निवासीगण ग्राम चंदौली खरेला को सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेलते हुये पालीवाल के घर के सामने चबूतरे से गिरफ्तार किया गया । जुआरियों के विरुद्ध धारा 13 जुआ अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया । गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक शिवकुमार यादव, का. आशीष कुमार आदि शामिल रहे। जुआरियों के फड़ से 3980 व तलाशी में 3010 रुपए बरामद किए गए।

यातायात नियमों के उल्लंघन पर किए गए 85 वाहनों के ई–चालान

महोबा। पुलिस अधीक्षक सुधा सिंह के निर्देश पर पुलिस अधिकारियों द्वारा कानून एवं शांति व्यवस्था के दृष्टिगत आमजन से संवाद स्थापित कर कानून व शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु तथा अफवाहों पर ध्यान न देने के लिए अपील की गई। इसी क्रम में पुलिस द्वारा संवेदनशील स्थानों पर प्रभावी पैदल गस्त किया गया। स्थानीय लोगों से आपसी सौहार्द बनाए रखनें, अराजकता फैलाने वालों की सूचना पुलिस को देने की अपील की गयी तथा जिले के सभी क्षेत्राधिकारियों द्वारा अपने–अपने सर्किल में तथा सभी थानाध्यक्षों द्वारा अपने–अपने थाना क्षेत्र के मुख्य बाजार, धार्मिक–स्थल, बस–स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन ढाबों आदि जगहों पर पैदल गस्त करते हुए यातायात नियमों को उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करते हुए वाहनों के चालान व सीज करने की कार्यवाही की गई। पुलिस द्वारा शराब की दुकानों का निरीक्षण किया गया एवं सेल्समैन को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए ।यातायात नियमों के उल्लंघन करने पर 85 वाहनों के ई–चालान किये गये। बता दें कि जिले में बेहतर कानून व्यवस्था और अपराधियों पर कार्यवाही के लिए लगातार यह अभियान संचालित किया जा रहा है।

किसानों के लिए नहीं होगी इफको यूरिया की कमी

महोबा। अब महोबा के किसानों को आने वाले समय में इफको यूरिया की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा, सुबह ही सर्वोच्च न्यायालय में भारत सरकार की अधिवक्ता महोबा निवासी सीमा पटनाहा सिंह ने सहकारिता मंत्री बीएल वर्मा को लिखित में किसानों की समस्या से अवगत कराया तथा तत्काल प्रभाव से 1 से 2 रैक यूरिया खाद की आपूर्ति की मांग की। जिसे सहकारिता मंत्री भारत सरकार ने मान लिया तथा तत्काल ही मंत्री ने योगेंद्र कुमार विपणन निदेशक इफको, नई दिल्ली को फोन कर दो रैक यूरिया खाद सप्लाई करने का आदेश भी दे दिया। जिसमें से 1 रैक तत्काल प्रभाव से भेजी जाएगी तथा दूसरी कुछ समय के बाद भेजी जाएगी। आने वाले समय में अब महोबा के किसानों को दर–दर की ठोकरें नहीं खानी पड़ेगी, जल्दी ही इफको यूरिया की सप्लाई महोबा में हो जाएगी । ज्ञात हो कि इफको यूरिया विभाग, सहकारिता मंत्रालय भारत सरकार के अधीन ही कार्य करता है । इससे पहले भी अधिवक्ता सीमा पटनाहा सिंह की पहल पर ही महोबा में महिला चिकित्सक डॉक्टर की नियुक्ति जिला चिकित्सालय में हुई थी। उस से पहले इलाज के लिए महिलाओं को जिले से बाहर जाना पड़ता था। सीमा पटनाहा सिंह अब महोबा ही नहीं बल्कि आसपास के समस्त जिलो में अब एक जानामाना नाम है जो बिना किसी राजनीतिक पद के क्षेत्र की जानता के लिए क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों से ज़्यादा कार्य कर रही है।

क्रिसमस महोत्सव पर जमकर झूमे नन्हे–मुन्ने, गरीबों को बांटा राशन व कंबल

बांदा। नगर के शांतीधाम सीनियर सेकेंड्री में भव्य क्रिसमस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। बच्चों ने ईसा मसीह के जन्म की झांकियों के साथ ही एक से बढ़कर एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया, वहीं इस मौके पर 100 जरूरतमंद लोगों को राशन, कपड़े व कंबलों का वितरण किया गया। जरूरत का सामान पाकर गरीबों के चेहरे खिल उठे। कस्बे के बदौसा रोड स्थित शांति धाम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में .क्रिसमस पर्व का आयोजन धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष संजय सिंह व प्रधानाचार्य टी.अरुलराज ने कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थना व स्वागत के साथ किया। स्कूली छात्र–छात्राओं ने ईसा मसीह के जन्म से जुड़ी विभिन्न झांकियां व नाटक प्रस्तुत किये। इसके साथ ही बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर तालियां बटोरीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय सिंह ने ईसा मसीह के जीवन से सेवा की प्रेरणा मिलने की बात कही। इस अवसर पर प्रधानाचार्य टी.अरुलराज ने कहा कि प्रभु ईसा मसीह के जीवन से हमें मानव की सेवा का संदेश मिलता है। रंगारंग कार्यक्रम के साथ एक सैकड़ा गरीब व जरूरतमंदों जब राशन, गर्म कपड़े और कपड़े वितरित किये गये तो मारे खुशी के उनके चेहरे खिल उठे। अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अमर सिंह राठौर ने भी कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस दौरान भारी संख्या में अभिभावक व शिक्षक परिवार मौजूद रहे।

पत्रकार पर मुकदमा दर्ज करने के विरोध मे पत्रकारों ने किया विरोध प्रदर्शन, सौपा ज्ञापन

मामले की मजिस्ट्रेटी जांच करने की पत्रकारो ने की मांग

कुशीनगर। महिला पुलिस के खिलाफ पत्रकार अखिलेश तिवारी द्वारा किये गये ट्विट के बाद पुलिस प्रशासन की ओर से पत्रकार पर दर्ज किये गये मुकदमे के विरोध मे गुरुवार को जिले के पत्रकार लामबंद हुए। जिला मुख्यालय स्थित बुद्धा पार्क मे इकट्ठा हुए सभी पत्रकारों ने पुलिसियां कार्रवाई की निंदा करते हुए विरोध प्रदर्शन किया और जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौप मामले की मजिस्ट्रेटी जांच कराने की मांग की है। जनपद के इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट से जुड़े सैकड़ो पत्रकारों ने जिला मुख्यालय स्थित कलेक्ट्रेट के सामने बुद्धा पार्क में इकठ्ठा होकर हाथों पर काली पट्टी बांध शान्तिपूर्ण मार्च निकालते हुए पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचे। यहां पत्रकारों ने पत्रकार अखिलेश तिवारी पर लगे आरोप की निष्पक्ष जाँच कराने के लिए एसपी को ज्ञापन सौपा। एसपी की ओर से संतोषजन आश्वासन न मिलने पर सभी पत्रकार साथी जिलाधिकारी कार्यालय पहुँचे और डीएम से मिलकर वायरल वीडियो को अखिलेश तिवारी द्वारा ट्विट किये जाने पर एफआईआर में लगाये आरोपो की निष्पक्ष मजिस्ट्रेटी जांच कराने की मांग किया। ज्ञातव्य हो कि तरयासुजान थाने पर तैनात महिला आरक्षी ने मुकामी थाने में 20 दिसम्बर को एक तहरीर देकर पत्रकार अखिलेश तिवारी पर गम्भीर आरोप लगाया है। महिला कांस्टेबल ने अपने तहरीर मे कहा की एक महिला कांस्टेबल के जन्मदिन पर महिला कांस्टेबल साथी ऑफ ड्यूटी बिना वर्दी के आवासीय कमरे में डांस कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अखिलेश तिवारी पत्रकार द्वारा लुक–छुप कर वीडियो बना लिया गया और उसे 20 दिसम्बर को सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया गया। जिससे हम लोगो की लज्जा को ठेस पहुची हैं। महिला कांस्टेबल के इस तहरीर पर पुलिस ने प्रकरण की बिना जांच किये ही पत्रकार अखिलेश तिवारी पर गम्भीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया। इसको लेकर पत्रकारों ने पुलिस पर एक पक्षीय व अन्याय पूर्ण कार्रवाई का विरोध प्रदर्शन किया हैं। इस बाबत आरोपी पत्रकार अखिलेश तिवारी ने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि मुझे बीस तारीख को एक वायरल वीडियो मिला। जिसे मैंने पहले थानाध्यक्ष से कन्फर्म किया फिर अपने संस्थान को भेजा फिर उसे ट्वीट किया। जिस पर महिला कांस्टेबल ने मेरे द्वारा वीडियो बनाये जाने का आरोप लगाया जो पूरी तरह गलत हैं। हालांकि अपने ट्वीट के बाद मैं एक और पोस्ट कर किसी की भावना आहत न करने के साथ माफी भी मांगी हैं। उन्होंने कहा कि वह अक्सर पुलिस और लापरवाह अधिकारियों के विरूद्ध उच्च अधिकारियों को ट्वीट के जरिये जानकारी देता रहा हूं। जिससे पुलिस महकमा काफी खार खाया हुआ था और मेरी कलम रोकने की नीयत से आनन फानन में मुकदमा दर्ज किया। इस दौरान मिथलेश्वर पाण्डेय, ओमप्रकाश द्विवेदी, कृष्णमोहन पांडेय, एसएन शुक्ला, संजय चाणक्य, मनीष मिश्रा, अखिलेश तिवारी, ज्योतिभान मिश्रा, बीबी त्रिपाठी, अजय मिश्रा, अनूप यादव, विनोद गौड, अरुण कुमार राव, अशोक शुक्ला, केडी यादव, कुन्दन मिश्रा, रजनीश राय, राजकुमार गिरी, राजेश चौहान, शिवाकांत पाण्डेय, गोपीचन्द, आदित्य पाण्डेय, सुनील, उपेंद्र, हेमंत, आरके भट्ट, फणेन्द्र पाण्डेय, अशोक सिंह, खुर्शेद आलम, विष्णु, अजित दीक्षित, खुर्शेद आलम, उपेन्द्र तिवारी, परमेश्वर यादव, शम्भू मिश्रा, दीपक मिश्रा, ब्रजेश मणि त्रिपाठी, सुनील मिश्रा, प्रमोद, मुकेश पटेल, समाजसेवी व प्रधानाचार्य शैलेन्द्र दत्त शुक्ल के साथ सैकडो पत्रकार मौजूद रहे।

राजकीय इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य पद पर चयनित शिक्षक हुये सम्मानित

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। राजकीय इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य के पद पर चयनित सिद्धार्थनगर जनपद के तीन होनहार शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए बांसी स्थित एसके मैरिज हाल में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया इस सम्मान समारोह के संयोजक विजय बहादुर अंबेडकर जी पेशे से एक शिक्षक हैं जो लगातार समाज सेवा का कार्य भी करते रहे हैं समाज सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले विजय बहादुर अंबेडकर ने इस सम्मान समारोह में वृहद स्तर पर आयोजन किया। कार्यक्रम के संरक्षक यू पी एजुकेशन मिनिस्ट्रियल एशोसियेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष ओंकार नाथ इस सम्मान समरोह में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। जिले के सैकड़ों शिक्षकों व कर्मचारियों की उपस्थिति में जिले के तीन होनहार शिक्षक जिन्होंने पीसीएस 2021 की परीक्षा में चयनित होकर अपने विद्यालय साथ ही जिले का नाम रोशन किया है को सम्मानित करते हुए कहा कि यह अत्यंत गौरव की बात है, इन तीन होनहार शिक्षकों में अमित कुमार सिंह तिलक इंटर कॉलेज बांसी में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। दया शंकर यादव जनता विद्या मंदिर इंटर कॉलेज उदयराज गंज में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं और श्याम बहादुर केंद्रीय विद्यालय सिद्धार्थ नगर में कार्यरत है। इस सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक सिद्धार्थनगर विशिष्ट अतिथि डायट प्राचार्य बांसी सिद्धार्थनगर रहे, साथ ही वित्त एवं लेखाधिकारी सिद्धार्थ नगर इटवा के विधायकमाता प्रसाद पांडे राज्य कर्मचारी परिषद के पदाधिकारी गण माध्यमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष एवं जिला मंत्री, प्राथमिक शिक्षक संघ के तमाम सारे पदाधिकारी गण मौजूद रहे। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला विद्यालय निरीक्षक सिद्धार्थनगर ने कहा की इन तीन होनहार शिक्षकों ने पीसीएस की परीक्षा में चयनित होकर जिले का नाम रोशन किया है और लोगों को ऐसी उच्च परीक्षाओं में चयनित होने के लिए प्रेरणा देने का भी कार्य किया है उन्होंने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा की ऐसे होनहारों के लिए सम्मान समारोह का मनाया जाना अत्यंत गौरव की बात है। संबोधित करने वालों में एस के मैरिज हाल के मालिक शमीम खान साहब ने कहा की समाज में मां–बाप के बाद अगर किसी का सबसे ऊंचा दर्जा होता है तो वह अध्यापक का ही होता है उन्होंने कहा कि बच्चे के अंदर संस्कार और शिक्षा देने के कार्य में सबसे बड़ी भूमिका मां–बाप के अतिरिक्त एक शिक्षक की ही होती है। इस सम्मान समारोह के कार्यक्रम को इटवा के विधायक माता प्रसाद पांडे ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य महामना मालवीय इंटर कॉलेज बरगदवा शैलेंद्र शर्मा ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में जुबेर अहमद, ओमकार नाथ, शमशुल हसन खान, दयाशंकर पटेल, देवेंद्र यादव, वकील अहमद खान, मोहम्मद यूनुस, मनीष कुमार भारती, पवन कुमार वर्मा, विनय प्रकाश विश्वकर्मा इत्यादि की मुख्य भूमिका रही। इस कार्यक्रम में डॉ कृष्ण कुमार, रामविलास यादव, हृदय नारायण मिश्रा, गिरीश चंद्र, मोहम्मद अरशद, संतोष कुमार सिंह, मनोज कुमार सिंह, हरेंद्र बहादुर सिंह, लोकपति सिंह, रामबाबू पाल, राकेश कुमार इत्यादि भारी संख्या में शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

वांछित अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

परसामालिक/नौतनवा। नेपाल भागने की फिराक मे था वांछित अभियुक्त मुखबिर की सूचना पर सीमावर्ती गांव से अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार परसामलिक पुलिस को शुक्रवार की सुबह मुखबिर के जरिये सूचना मिला की थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत कोहरगड्डी निवासी डब्लू भारती उर्फ डबालू पुत्र प्रेमसागर उर्फ प्रेम उम्र 25 वर्ष जिस पर पूर्व मे दर्ज मुकदमा अपराध संख्या 77ध्22 की धारा 363ध्366 व मुकदमा अपराध संख्या 147ध्22 की धारा 457ध्324ध्504ध्506ध्से सम्बंधित उपरोक्त अभियुक्त को पुलिस ने मुखबिर के सूचना पर विश्वास करते हुए थानाध्यक्ष अमरेन्द्र कन्नौजिया चौकी प्रभारी सेवतरी सूरज कुमार उपनिरीक्षक रोहित कुमार हेड कांस्टेबल उमेश यादव कान्सटेबल अब्दुल कादिर व मोहित कुमार ने शुक्रवार की सुबह थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मर्यादपुर पहाडी टोले से अभियुक्त को गिरफ्तार न्यायालय चालान कर दिया।

एम्बुलेंस में गुंजी नवजात शिशु की किलकारी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। एंबुलेंस में गूंजी किलकारी ग्राम पंचायत बरसोत निवासी शिवानी पत्नी वीरेंद्र को जब प्रसव पीड़ा हुई तो परिजनों ने 102 एंबुलेंस सेवा पर फोन किया कुछ ही देर बाद एंबुलेंस कर्मियों में सुरेश नारायण मिश्रा और संतोष कुमार यादव ने प्रसूता महिला को लेकर अस्पताल की ओर रवाना हुए। घर से लगभग आधा किलोमीटर दूर जाने पर शिवानी को तेजी के साथ प्रसव पीड़ा शुरू हुई परिणाम स्वरूप ईएमटी तथा आशा कलावती के सहयोग से शिवानी में स्वस्थ नवजात शिशु को जन्म दिया और पूरे एंबुलेंस में किलकारी गूंजने लगी कागजी औपचारिकता पूरी करने के लिए एंबुलेंस कर्मियों ने नया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र शाहगंज पर मरीज को भर्ती कराया। जहां जच्चा बच्चे को स्वस्थ बताया गया।

जनपद स्तरीय किसान सम्मान दिवस एंव किसान मेला का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर जनपद स्तयीय किसान सम्मान दिवस, रवी गोष्ठी एवं किसान मेला का आयोजन लोहिया कलाभवन में विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही, विधायक इटवा माता प्रसाद पाण्डेय, विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा, जिलाधिकारी संजीव रंजन द्वारा स्व0 चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं द्वीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया। जनपद स्तयीय किसान सम्मान दिवस, रवी गोष्ठी एवं किसान मेला के अवसर पर मा0 विधायक इटवा माता प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह ने किसानो की समस्याओ का निराकरण कराने का कार्य किया। उन्होने कहा कि किसानों की पैदावार अच्छी होगी तभी देश का विकास होगा। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। हमे उन्नतशील बीज का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक विधि से खेती करने की आवश्यकता है। जिससे आय अच्छी होगी। विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही ने अपने सम्बोधन में कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह किसानों की लड़ाई लड़ने का काम किया। प्रधानमंत्री भारत सरकार नरेन्द्र मोदी द्वारा युवाओं को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे वह अपने घर पर रहकर अपनी आय को बढ़ा सके। किसानो को खेती करने के लिए प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराकर उन्नतशील खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषि उपकरण, बीज आदि पर सब्सिडी देकर किसानों की आय दोगुना करने का कार्य कर रही है। अन्नदाता किसानो द्वारा कड़ी मेहनत कर फसल तैयार करते है। अन्नदाता किसानो को बधाई दिया गया। विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा ने पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह की जयंती के अवसर पर अन्नदाता किसानो को बधाई दी। विधायक शोहरतगढ़ द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह द्वारा किसानो के हित में किये गये कार्यो के बारे में जानकारी दी गयी। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार स्व0 चौधरी चरण सिंह द्वारा किसानो के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया गया। जिसके कारण उनके जन्मदिवस के अवसर पर किसान सम्मान दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। किसान हमेशा नया प्रयोग करता है जिससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। वैज्ञानिक विधि से खेती करके विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी आय प्राप्त कर सकते है। प्रसल प्रबन्धन कर एक फसल एक उत्पादन के स्थान पर द्विफसली उत्पादन कर सकते है। उपकृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा द्वारा विभिन्न योजनाओं के बारे में उपस्थित किसानों को विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी। इस अवसर पर कृषि विभाग द्वारा विभिन्न फसलों में अच्छी पैदावार करने वाले किसान, उद्यान विभाग द्वारा सब्जी में केला आदि में अच्छी पैदावार करने वाले किसान, मछली पालन में अच्छा कार्य करने वाले लाभार्थी, पशु पालन विभाग द्वारा दुग्ध उत्पादन में अच्छा कार्य करने वाले किसान, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत क्षतिपूर्ति प्राप्त करने वाले किसान कुल 38 किसानो को माला पहनाकर, अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सांसद डुमरियागंज प्रतिनिधि अमरेन्द्र प्रताप सिंह, उपकृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा, जिला कृषि अधिकारी सी0पी0सिंह, जिला भूमि संरक्षण अधिकारी, सहायक निदेशक मत्स्य सुमन सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा0 एम0पी0सिंह, जिला उद्यान अधिकारी तथा अन्य अधिकारी व किसान आदि उपस्थित थे।

अंगदानी दीपक कुमार केसरवानी हुए सम्मानित

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित रामायण कल्चर मैपिंग योजना के डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर, संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ के नामित सदस्य, विंध्य संस्कृति सेवा समिति उत्तर प्रदेश ट्रस्ट के निदेशक साहित्यकारध्पत्रकारध्इतिहासकार दीपक कुमार केसरवानी को जनपद मुख्यालय रॉबर्ट्सगंज स्थित आर्य समाज मंदिर में सप्त श्रीमद् भागवत कथा के अंतिम दिन व्यासपीठ की मुख्य कथावाचक श्री धाम अयोध्या से पधारी देवी विष्णु प्रिया द्वारा अंगवस्त्रम, स्मृति चिन्ह, एवं राघवेंद्र बाल संस्कार केंद्र कोटा राजस्थान के संस्थापक ज्ञानेशानंद द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। यज्ञ आचार्य एवं कार्यक्रम के संचालक सौरभ कुमार भारद्वाज ने इस अवसर

पर कहां की केसरवानी द्वारा साहित्य, कला, संस्कृति इतिहास एवं अध्यात्म के क्षेत्र में किया जाने वाला कार्य अनुकरणीय है, वर्ष 2014 में केसरवानी और उनकी पत्नी प्रतिभा देवी ने वाराणसी को अंगदान, नेत्रदान करके सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण किया है इनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए और जनहित मे अंगदान और नेत्र दान करना चाहिए इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए। इनके उत्कृष्ट कार्य से सोनभद्र जनपद का नाम देश–विदेश में रोशन हो रहा है। श्रीमद् भागवत कथा के दिव्य आयोजन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है और भविष्य में भी रहेगी।

इस अवसर पर कार्यक्रम के आयोजक रतन लाल गर्ग, संयोजक नरेंद्र गर्ग, कृष्ण कुमार गर्ग, विनोद गर्ग, सदर विधायक भूपेश चौबे, पूर्व एमएलसी जयप्रकाश चतुर्वेदी, समाजसेवी डॉक्टर कुसुमाकर श्रीवास्तव सहित जनपद के साहित्यकार, पत्रकार, विशिष्ट जन, सैकड़ों की संख्या में भगवत प्रेमी उपस्थित रहे। केसरवानी के सम्मानित होने पर साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक संगठनों के सदस्य एवं पदाधिकारियों ने हर्ष व्यक्त किया है।

सपा कार्यकर्ताओं ने मनाया किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह की जयंती

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। समाजवादी पार्टी के निवर्तमान जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी की अध्यक्षता में चौधरी चरण सिंह की जयंती जिला पार्टी कार्यालय पर शुक्रवार को हर्ष उल्लास के साथ मनाई गई स जिसका संचालन निवर्तमान ब्लॉक अध्यक्ष अशोक पटेल ने किया। गोष्टी को संबोधित करते हुए नि वर्तमान जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह किसान नेता थे जो हमेशा किसानों की लड़ाई लड़ने का काम किया। चौधरी चरण सिंह के रास्ते पर चलते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव ने हमेशा किसानों की लड़ाई लड़ने का काम किया। कुरैशी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी

की सरकार प्रदेश के किसानों के ही नहीं पूरे देश के किसानों की हितैषी नहीं है। भाजपा सरकार जब–जब सत्ता में आई तब तब किसानों को ठगने का काम किया स भाजपा सरकार में किसानों के साथ अन्याय हो रहा है। भाजपा किसानों को तबाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। भाजपा की आर्थिक नीतियां किसानों के लिए कोई स्थान नहीं है। गोष्टी को संबोधित करते हुए निवर्तमान ब्लॉक अध्यक्ष अशोक पटेल ने कहा कि देश के अन्य सारे धंधे फायदे में लेकिन किसान घाटे में है स जब तक देश का किसान सुखी नहीं होगा तब तक देश संपन्न और महान नहीं बन सकता स 65: किसान गरीबी रेखा से नीचे हैं यदि देश के किसान कृषि कार्यों में अपने परिवार के ही मेहनत जोड़ दे तो कृषक जितना घाटे में है उतना घाटे में कोई नहीं है यदि किसी किसान परिवार में 5 सदस्य हैं और उनकी मेहनत को 365 दिन में बाट कर देखा जाए तो मजदूरी बहुत कम पड़ती है। गोष्ठी में मुख्य रूप से अनिल प्रधान, जितेंद्र गुप्ता, विजय पांडे, बबलू थापा, अमन गोस्वामी, अकबर अली, रामबदन, पेबारू यादव, धर्मेंद्र चौहान, रामकृपाल यादव, अजय आदि लोग मौजूद रहे।

प्रशासन गांव की ओर ग्राम पंचायत गोठानी में उपजिलाधिकारी ने लगाई चौपाल

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। भारत सरकार एवं राज्य सरकार के निर्देश पर

शुसासन सप्ताह के अंतर्गत ष्प्रशासन गांव की ओर कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत गोठानी विकास खंड चोपन में मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार एवं अपर जिलाधिकारी सहदेव मिश्र ने किसान चौपाल लगाकर लोगों की समस्याएं सुनी तथा उसका निस्तारण किया। किसान दिवस के अवसर पर गांव में किसानों की मुख्य रूप से समस्याओं का निस्तारण प्रशासन ने किया। जन चौपाल में मुख्य विकास अधिकारी ने गांव के लोगों से कहा कि प्रशासन सदैव आपके साथ है आपके किसी भी शिकायत के निस्तारण के लिए प्रशासन की पूरी टीम गांव की ओर है। मौके पर ही इसका निस्तारण किया जा रहा है आज ग्राम पंचायतों में प्रत्येक सोमवार को रोस्टर के अनुसार जन चौपाल का आयोजन कर शिकायतों का निस्तारण किया जा रहा है। किसानों के शिकायतों के निस्तारण के लिए प्राथमिकता पर निवारण किया जा रहा है। किसानों को सरकार के सभी लाभकारी योजना को बताया गया। जन चौपाल में अपर जिलाधिकारी ने सभी का आह्वान किया कि आप अपनी बात को प्रशासन के समक्ष निसंकोच रूप से रखें उसका निस्तारण किया जा सके आज सभी को अपनी बात रखने का अधिकार संविधान में दिया गया है। आज किसान दिवस के अवसर पर तथा प्रशासन गांव की ओर सुशासन सप्ताह मनाया जा रहा है जिसमें लोगों की शिकायतों को प्राथमिकता के तौर पर किया जा रहा है। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान, सचिव, सहायक विकास अधिकारी पंचायत, खंड विकास अधिकारी, उप जिलाधिकारी, डीपीआरओ विशाल सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

कलेक्ट्रेट परिसर में चौधरी चरण सिंह की मनाई गई जयंती

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। भूतपूर्व प्रधानमंत्री

चौधरी चरण सिंह की जयन्ती के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर में जनपद के 32 प्रगतिशील किसानों को जिला पंचायत अध्यक्ष राधिका पटेल व मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार द्वारा स्मृतिचिन्ह, प्रशस्ति–पत्र व नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, इस अवसर मक्का विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत मक्का उत्पादकता गोष्ठीध्सेमिनार का आयोजन किया गया, इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष राधिका पटेल ने आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिले के किसानों ने परम्परागत खेती से हटकर तकनीकी खेती को अपनाया है, जिस कारण तकनीकी विधि से खेती से अच्छी आमदनी की उम्मीद किसानों में देखने को मिल रही है, कई किसानों ने बागवानी की खेती कर रहे हैं, तो वहीं कुछ किसानों ने ड्रैगन फ्रूट, स्ट्राबेरी, मशरूम आदि की खेती कर अपनी आय को दुगुना किया है, जो प्रशंसा के पात्र हैं। आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार ने समारोह में किसानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि तकनीकी विधि से की जा रही खेती जैसे–ड्रैगनफ्रूड के साथ ही स्ट्राबेरी का भी उत्पादन आसानी के साथ किया जा सकता है, जिससे किसानों की आमदनी में काफी बढ़ोत्तरी हो सकती है, इस खेती में कम लागत व कम पानी में अधिक पैदावार कर किसान बन्धु अपनी स्थिति को और मजबूत कर सकते हैं, इस मौके पर प्रगतिशील किसान मानसिंह पटेल द्वारा एक हेक्टेयर में ड्रैगनफ्रूट की खेती किया गया, के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि इस खेती से अच्छी खासी मुनाफा होने की उम्मीद है, इसी प्रकार से अन्य प्रगतिशील किसानों ने भी अपने–अपने अनुभवों को उपस्थित किसानों के साथ साझा किया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ड्रैगनफ्रूट की खेती से मुनाफा के साथ ही सेहत के लिए भी काफी कारगर है, जिससे इसकी मांग में लगातार वृद्धि हो रही है। इस दौरान जिले के प्रगतिशील किसानों को गेंहूँ, चना, मक्का, मौन पालन, टमाटर, ड्रैगनफ्रूट, मिर्च, कोया उत्पादन, मछली पालन, दूध उत्पादन आदि के क्षेत्रों में अच्छे कार्य करने पर प्रथम व द्वितीय स्थान का चयन कर क्रमशः 7 हजार व 5 हजार रूपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, इस दौरान कलेक्ट्रेट परिसर में विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शनी अपने–अपने विभागों द्वारा संचालित योजनाओं से किसानों व अन्य लोगों को जानकारी दी गयी। इस मौके पर जिला कृषि अधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, वैज्ञानिक डॉ0 एल0पी0 सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी विशाल सिंह, अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान बन्धुगण के साथ ही अन्य प्रबुद्धजन व नागरिकगण उपस्थित रहें।

फर्जी मुकदमा के विरोध में किया गया धरना प्रदर्शन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शक्तीनगर/सोनभद्र। शुक्रवार को महात्मा फुले फाउंडेशन के तत्वाधान में जिलाध्यक्ष लाल बाबू कुशवाहा एवं जन अधिकार पार्टी के जिलाध्यक्ष पिन्टू

लाल कुशवाहा की अगुवाई में स्व0 सांध्य कुशवाहा के परिजनों एवं जन अधिकार पार्टी के जिलाध्यक्ष व अन्य के ऊपर एनसीएल के सुरक्षा अधिकारी सन्दीप कुमार साह द्वारा कराए गए फर्जी मुकदमा वापस करने व संध्या के परिजनों को पच्चास लाख रुपए दिए जाने की मांग को लेके सैकड़ो की संख्या महिला पुरुष इकट्ठा होकर जीएम कार्यालय निगाही के समक्ष इकट्ठा होकर धरना प्रदर्शन किया व परियोजना के महा प्रबन्धक को मांगपत्र सौपा। धरना प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए महात्मा फुले फाउंडेशन के जिलाध्यक्ष लाल बाबू कुशवाहा एवं जन अधिकार पार्टी के जिलाध्यक्ष पिन्टू लाल कुशवाहा' ने कहा कि दिनांक 18 अक्टूबर 2022 को चन्दैल बस द्वारा निगाही कालोनी में संध्या कुशवाहा का एक्सीडेंट हो गया था जिसमे संध्या कुशवाहा गम्भीर रूप से घायल हो गयी थी इलाज में लगभग पन्द्रह लाख रुपए लगा इसके बावजूद संध्या की जान बच नही पाई परिवार के ऊपर दुखो का पहाड़ टूट गया इसके बावजूद बस मालिक एवं एनसीएल की मिलीभगत से एनसीएल के सुरक्षा अधिकारी संदीप कुमार शाह द्वारा संध्या के परिजनों व अन्य लोगों के विरुद्ध फर्जी मुकदमा लगाकर उत्पीड़न किया जा रहा है जिसे किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा महात्मा फुले फाउंडेशन एवं जन अधिकार पार्टी परिजनों को न्याय दिलाने की लड़ाई अंतिम दम तक लड़ेगी जरूरत पड़ी तो अनिश्चितकालीन धरनाध्आमरण अनशन भी किया जाएगा। 'जन अधिकार पार्टी के रीवा संभाग प्रभारी भागीरथी सिंह मौर्य' ने कहा कि एक्सीडेंट के बाद बस पलट गई जिसके कारण जाम लग गया व लोग घटना स्थान पर न पहुँच सके इसके लिए एनसीएल के कर्मचारियों द्वारा ही मुख्य गेट को बंद किया था इसके वावजूद संध्या के परिजनों, जाप जिलाध्यक्ष पिन्टू लाल कुशवाहा व अन्य के ऊपर फर्जी मुकदमा लगाना कहा तक का न्याय संगत है इसके साथ परिजनों के ऊपर दबाव बनाया जा रहा है कि एक्सीडेंट करने वाली बस के ऊपर परिजनों द्वारा किए गए मुकदमे को वापस करो अन्यथा जेल जाना पडेगा। इस तरह के तानासाही के खिलाफ जरूरत हुई तो आर–पार का आंदोलन किया जाएगा। धरना प्रदर्शन को जन अधिकार पार्टी के वाराणसी मण्डल प्रभारी सुमन्त सिंह मौर्य, सोनभद्र जिला महासचिव रविरंजन शाक्य, सिंगरौली प्रभारी अवनीश सिंह कुशवाहा, समाजवादी नेता श्याम बिहारी यादव, पार्षद शिवकुमारी कुशवाहा, रामबृक्ष कुशवाहा, संदीप शाह व रामबृक्ष कुशवाहा ने भी सम्बोधित किया धरना प्रदर्शन में लालबहादुर कुशवाहा, श्यामलाल कुशवाहा, अक्षय शाह, सन्दीप शाह, एड0 दिलीप कुशवाहा, हनुमान कुशवाहा, मोहित कुशवाहा, नीरज कुशवाहा, पवन कुशवाहा, रामसुभक कुशवाहा, राजेन्द्र कुशवाहा, एड0 चन्द्र प्रकाश कुशवाहा, अशोक कुशवाहा, हरिश्चंद्र कुशवाहा, रामबहोर कुशवाहा सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे ।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458
संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा
9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल, परिक्षेत्र मीरजापुर आर0पी0 सिंह किया आकस्मिक निरीक्षण

जनपद सोनभद्र के थाना शाहगंज का किया गया आकस्मिक निरीक्षण, दिये गये आवश्यक दिशा निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुलिस उपमहानिरीक्षक विन्ध्याचल, परिक्षेत्र मीरजापुर ष्आर0पी0 सिंहष् द्वारा थाना शाहगंज का आकस्मिक निरीक्षण किया गया एवं निरीक्षण के पश्चात निम्न निर्देश जारी किये गये। थाना कार्यालय में रखे अभिलेखों अपराध रजिस्टर, आगंतुक रजिस्टर, त्यौहार रजिस्टर, भूमि विवाद रजिस्टर, हत्याध्बलवा से सम्बन्धित रजिस्टर व बीट सूचना रजिस्टर तथा अन्य अभिलेखों का अवलोकन किया गया तथा उक्त अभिलेखों को अद्यावधिक करने एवं उचित रख रखाव जनसुनवाई रजिस्टर का अवलोकन करते हुए शिकायती प्रार्थना पत्रों का शत–प्रतिशत अंकन करने तथा समस्या का निस्तारण करते हुए शिकायती प्रार्थान पत्रों के निस्तारण के संबंध में फरियादियों से निरन्तर फीडबैक प्राप्त कर रजिस्टर में अद्यावधिक कर स्वयं प्रभारी निरीक्षक को फीडबैक लेने के लिए निर्देशित किया गया।. महिला हेल्प डेस्क पर प्राप्त प्रार्थना पत्रों के निस्तारण की समीक्षा करते हुए महिला पुलिस कर्मियों को फरियादियों से अच्छे व्यवहार करने व उनकी समस्याओं को सुनकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराने हेतु दिशा निर्देश दिये गये। बीट पुलिसिंग प्रणाली के माध्यम से जनसमस्याओं के समाधान हेतु तथा बीट पुलिस कर्मियों की समीक्षा की गयी और समय से बीट सूचना अंकित कराने मालखाने में रखे बलवा ड्रिल से सम्बन्धित उपकरणों की साफ सफाई करा कर रखने ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनका तत्काल उपयोग किया जा सके एवं लावारिश वाहनध्माल की सूची बनाकर नीलामी की प्रक्रिया नियमानुसार अतिशीघ्र कराने थाने में खड़े बेतरतीब वाहनों को उचित स्थान पर यथाशीघ्र रखने तथा थाना परिसर की साफ सफाई हेतु सभी पुलिस कर्मियों को मानक के अनुसार वर्दी धारण करने तथा टर्नआउट उच्च कोटि का रखने के लिए निर्देशित किया गया। निरीक्षण के दौरान क्षेत्राधिकारी घोरावल थाना प्रभारी शाहगंज सहित अन्य अधिकारीध्कर्मचारीगण मौजूद रहे।

सर्दियों में त्वचा की खुजली से राहत पाने के लिए अपनाएं ये 5 घरेलू नुस्खे

सर्दियों के मौसम में अक्सर हम सभी की त्वचा ड्राई हो जाती है, जिसकी वजह से खुजली और जलन होती है। इससे राहत पाने के लिए लोग त्वचा को ज्यादा खरोंच लेते हैं। इससे त्वचा की सुरक्षात्मक बाधा को नुकसान पहुंचता है। इसके अलावा एलर्जी और रसायनों के संपर्क में आने और मौसम में बदलाव के कारण भी खुजली हो सकती है। आइए आज हम आपको खुजली से राहत पाने के लिए पांच घरेलू नुस्खे बताते हैं।

पेपरमिंट ऑयल का इस्तेमाल करें

पेपरमिंट ऑयल एक ऐसा एसेंशियल ऑयल है जो पुदीने की पत्तियों से तैयार होता है। यह ठंडा होता है और मामूली जलने, कटने, छिलने, दानों, ड्राईनेस और कीड़े के काटने आदि के कारण होने वाली खुजली से राहत देता है। 2012 के एक अध्ययन के अनुसार, इस ऑयल में मेंथॉल होता है, जो गर्भवती महिलाओं में खुजली वाली त्वचा का इलाज करता है। यह त्वचा की जलन के कारण होने वाले दर्द को शांत करने में भी मदद करता है।

ओट्स से नहाएं: ओट्स का इस्तेमाल सदियों से त्वचा की कई स्थितियों के इलाज के लिए किया जाता है। इसमें मौजूद एंटी–इंफ्लेमेटरी और एंटी–ऑक्सीडेंट गुण रूखेपन, त्वचा की खुजली और खुरदुरेपन को कम करने में मदद करते हैं। कोलाइडियल ओट्स (बारीक पिसा हुआ) से नहाने से त्वचा की सूजन कम हो सकती है, जिसकी वजह से खुजली होती है। यह आपकी त्वचा को फिर से हाइड्रेट करने में भी मदद करता है और खुजली की तीव्रता को कम करता है।

एलोवेरा का इस्तेमाल करें

त्वचा की देखभाल के लिए एलोवेरा काफी उपयोगी है। इसके एंटी–फंगल गुण रूखी त्वचा को ठीक करके खुजली और सूजन को कम करने में काफी मददगार हैं। इसके अलावा यह आपकी त्वचा को साफ और चमकदार भी बनाता है। आप दिन में दो बार सीधे प्रभावित क्षेत्र पर ताजा एलोवेरा जेल लगा सकते हैं। यह सभी प्रकार की त्वचा पर उपयोग करने के लिए सुरक्षित है। इसमें मौजूद स्किन–स्मूथिंग एजेंट रूखी त्वचा को मॉइस्चराइज भी करते हैं।

पानी में नीम के पत्ते डालकर नहाएं: नीम भारतीय घरों में उपयोग की जाने वाली सबसे लोकप्रिय जड़ी–बूटियों में से एक है। यह न केवल खुजली से राहत देने में मदद करता है, बल्कि आपकी त्वचा को हानिकारक संक्रमणों से भी बचाता है। नीम में मौजूद एंटी–माइक्रोबियल और एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण शरीर पर होने वाले रैशेज को भी ठीक करते हैं। इसके लिए 30 मिनट तक पानी में नीम के पत्तों को भिगोकर इस पानी से नहाएं। इसकी मदद से खुजली, सूखी और चिड़चिड़ी त्वचा से राहत मिलेगी।

प्रभावित जगह पर लगाएं सेब का सिरका

सेब का सिरका एंटी–सेप्टिक, एंटी–फंगल और एंटी–बैक्टीरियल गुणों से भरपूर होता है। यह सूखी, खुजली और जलन वाली त्वचा को ठीक करने में मदद करता है। यह त्वचा की एसिडिटी के स्तर को बहाल करके एक्जिमा से भी राहत देता है। इसका इस्तेमाल करने के लिए थोड़े से सेब के सिरके को प्रभावित जगह पर डॉयरेक्ट लगा लें। यह त्वचा के पीएच स्तर को संतुलित करेगा, उपचार प्रक्रिया को तेज करेगा और खुजली को बेअसर करने में मदद करेगा।

मिर्जापुर की डिम्पी ने की बोल्डनेस की हदें पार, ब्रालेट में कराया लेटेस्ट फोटोशूट

वेब सीरीज की दुनिया में तहलका मचाने वाली सीरीज मिर्जापुर में डिम्पी का किरदार निभाने वाली हर्षिता गौर बेहद ही ग्लैमरस हैं। उनकी किलर और हॉटनेस से भरी तस्वीरें फैंस को काफी पसंद आ रही हैं। सीरीज के अब तक दो सीजन आ चुके

हैं। वहीं, इसके तीसरे सीजन की तैयारी चल रही हैं। एक्ट्रेस हर्षिता गौर के दोनों सीजन में किरदार देखकर फैंस उनके दीवाने हो गए हैं। मिर्जापुर वेब सीरीज में अपने डिम्पी के किरदार से अलग हटकर हर्षिता गौर रियल लाइफ में बेहद ही ग्लैमरस हैं। हर्षिता गौर अपनी बोल्डनेस और हॉटनेस से फैंस के दिलों पर कहर बरपाने का हुनर बखूबी जानती हैं। एक्ट्रेस हर्षिता गौर ब्रालेट पहनकर अपना बोल्ड फोटोशूट करवाया है, जिसमें एक्ट्रेस गजब की बला नजर आ रही हैं। हर्षिता ने ब्रालेट के साथ मिनी स्कर्ट और ब्लू कलर का ओवर कोट पहन रखा है। अपने लुक को कंप्लीट करने के लिए लॉन्ग रिंग के ईयरिंग्स और हाथ में ब्रेसलेट पहने नजर आ रही हैं। बूट लुक में मिर्जापुर की डिम्पी बेहद ही स्टनिंग लग रही हैं। फैंस उनकी तस्वीरों को बारीकी से निहार रहे हैं। एक्टिंग के साथ ही अपने बोल्ड लुक से फैंस के दिलों को धड़काने वाली हर्षिता गौर सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। हर्षिता के वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें जल्द ही शमिर्जापुर ३श वेब सीरीज में देखा जाने वाला है। एक्ट्रेस हर्षिता अपने फैंस के लिए निजी और प्रोफेशनल पलों को साझा करती रहती हैं।

अपनी नई फिल्म कुत्ते को लेकर अर्जुन कपूर ने साझा किया अनुभव

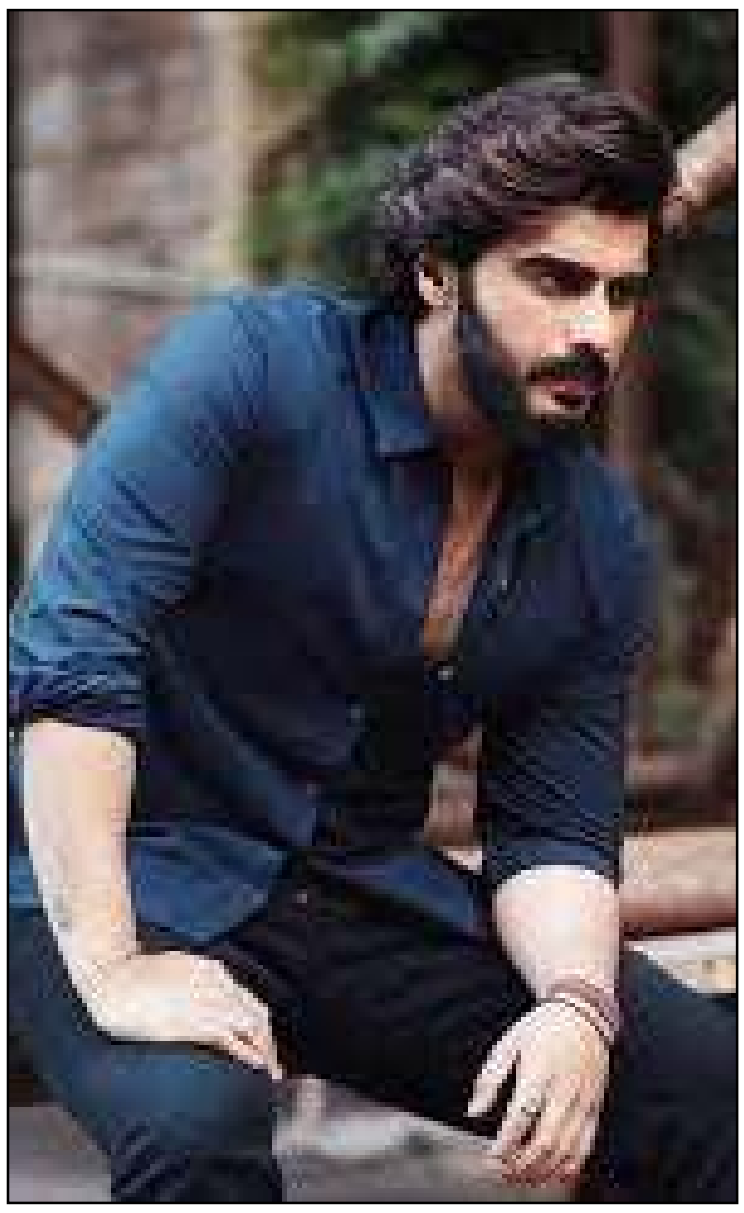

अभिनेता अर्जुन कपूर कुत्ते का ट्रेलर साझा करने के लिए उत्साहित हैं, जिसका अनावरण अगले सप्ताह किया जाएगा। अभिनेता का कहना है कि इस तरह की फिल्म किसी भी अभिनेता के लिए सीखने का एक अच्छा जरिया है। कुत्ते एक डार्क कॉमेडी फिल्म है, इसमें कोंकणा सेन शर्मा, कुमुद मिश्रा और राधिका मदान, तब्बू और नसीरुद्दीन शाह जैसे उत्कृष्ट कलाकार हैं।

इस फिल्म का निर्देशन फिल्म निर्माता विशाल भारद्वाज के बेटे आसमान भारद्वाज ने किया है। फिल्म कुत्ते में अर्जुन कपूर एक पुलिस वाले की भूमिका निभा रहे हैं। अपने किरदार के बारे में बात करते हुए अभिनेता ने कहा है, मुझे इंतजार है कि जब कुत्ते का ट्रेलर रिलीज होगा तो लोग इसको लेकर क्या प्रतिक्रिया देते हैं। पर मुझे उम्मीद है कि दर्शकों को कुछ नया देखने को मिलेगा। आगे अपनी बात करते हुए अभिनेता ने कहा, मेरे लिए कुत्ते बहुत खास फिल्म है। मुझे लव रंजन जैसे प्रतिभाशाली फिल्म निर्माता के साथ काम करने का मौका मिला, आसमान भारद्वाज जैसे उल्लेखनीय नवोदित निर्देशक, विशाल भारद्वाज को निर्माता, लेखक और संगीतकार के रूप में जानने का मौका मिला, गुलजार साब ने गीत लिखे हैं।

इसके साथ मैंने इस फिल्म में बेहतरीन कलाकारों जैसे तब्बू, कोंकणा सेन शर्मा, नसीर सर, कुमुद जी, शार्दुल भारद्वाज और राधिका मदान के साथ काम किया। उन्होंने आगे कहा, मेरे लिए फिल्म की शूटिंग करना बहुत मजेदार था और यह सीखने का भी एक शानदार अनुभव था।

इस तरह की फिल्म किसी भी अभिनेता को बहुत कुछ सिखाती है और मुझे लगता है कि मैंने अपने कौशल को हमारे देश के सर्वश्रेष्ठ अभिनेताओं के साथ तराशा है। मैं कुत्ते के ट्रेलर के लिए लोगों की प्रतिक्रिया देखने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं। कुत्ते 13 जनवरी 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

ब्रीदरू इनटु द शैडोज 2 के बाद अब एनकाउंटर स्पेशलिस्ट बनेंगे अमित साध

अभिनेता अमित साध को हाल में वेब सीरीज ब्रीदरू इनटु द शैडोज 2 में देखा गया। पुलिस अफसर कबीर के किरदार में उन्हें

लोगों ने खूब सराहा। अब वह एक बार फिर पुलिस अधिकारी के अवतार में नजर आएंगे। वह अपनी अगली फिल्म में एनकाउंटर स्पेशलिस्ट की भूमिका में दर्शकों के बीच आएंगे। सचिन श्रॉफ फिल्म का निर्देशन कर रहे हैं, जबकि इसे यूवीं फिल्म्स द्वारा प्रोड्यूस किया जाएगा। अमित जल्द इस फिल्म की शूटिंग शुरू करने वाले हैं। अमित ने कहा, मुझे कॉप ड्रामा पसंद है। जब मैंने इसकी स्क्रिप्ट पढ़ी, तो मुझे यकीन हो गया कि यह सिर्फ एक एनकाउंटर स्पेशलिस्ट की कहानी नहीं है, बल्कि उसके जटिल मनोविज्ञान से संबंधित है। जब मैं निर्देशक सचिन से मिला, तभी पता था कि मुझे यह फिल्म करनी है। अमित के साथ सीमा बिस्वास, तिग्मांशु धूलिया और मिलिंद गुनाजी जैसे कलाकार इस फिल्म की शोभा बढाएंगे।

त्वचा का निखार बढ़ाने के लिए रोजाना करें इन 5 योगासनों का अभ्यास

अमूमन लोग त्वचा पर निखार लाने के लिए तरह–तरह के महंगे स्किन केयर प्रोडक्ट्स खरीद लेते हैं, फिर भी उन्हें मनचाहा नतीजा नहीं मिल पाता है। ऐसे में योग को रूटीन में शामिल करना अच्छा है। यह न सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, बल्कि यह त्वचा की बनावट में सुधार करने और इसे प्राकृतिक रूप से निखारने में भी सहायक हो सकता है। आइए आज इसके लिए पांच योगासनों के अभ्यास का तरीका जानते हैं।

त्रिकोणासनः इसके लिए सबसे पहले योगा मैट पर सीधे खड़े हो जाएं। अब दोनों पैरों को जितना हो सके, उतना खोलकर अपने दोनों हाथों को कंधों की सीध में फैलाएं। इसके बाद एक हाथ की उंगलियों से उसी तरफ के पैर के अंगूठे को छूने की कोशिश करें। इस अवस्था में दो–तीन मिनट तक बने रहने के बाद धीरे–धीरे आसन छोड़ें और इसी प्रक्रिया को दूसरे हाथ की तरफ से दोहराएं।

भुजंगासनः भुजंगासन के लिए योगा मैट पर अपने हाथों को अपने कंधों के नीचे रखकर पेट के बल लेट जाएं। अब अपने हाथों से दबाव देते हुए अपने शरीर को जहां तक संभव हो सके, उठाने की कोशिश करें। इस दौरान सामान्य तरीके से सांस लेते रहें। इसके बाद कुछ देर इसी मुद्रा में बने रहें और धीरे–धीरे सामान्य हो जाएं। यह योगासन आपकी त्वचा पर निखार लाने में मदद करेगा।

उष्ट्रासनः उष्ट्रासन का अभ्यास करने के लिए योगा मैट पर घुटनों के बल बैठें, फिर घुटनों के बल ही खड़े हो जाएं। अब सामान्य रूप से सांस लेते हुए पीछे की ओर झुकें। इसके बाद दायीं हथेली को दायीं एड़ी पर और बायीं हथेली को बायीं एड़ी पर रखने की कोशिश करें। इस मुद्रा में कम से कम एक–दो मिनट रहने के बाद धीरे–धीरे सामान्य हो जाएं और कुछ मिनट विश्राम करें।

धनुरासनः धनुरासन के लिए योगा मैट पर पेट के बल लेट जाएं। अब अपने दोनों घुटनों को अपनी पीठ की तरफ से मोड़ें और हाथों से टखनों को पकड़ें। इसके बाद सांस लेते हुए अपने पूरे शरीर को इस प्रकार ऊपर उठाने की कोशिश करें कि शरीर का आकार धनुष के समान लगे। अब अपनी क्षमता के हिसाब से इस मुद्रा में रहें और धीरे–धीरे सांस लेते–छोड़ते रहें, फिर कुछ सेकेंड बाद धीरे–धीरे सामान्य हो जाएं।

हलासन

हलासन के लिए सबसे पहले योगा मैट पर पीठ के बल सीधे लेट जाएं, फिर अपने हाथों को शरीर से सटाकर रखें। अब सांस लेते हुए पैरों को 90 डिग्री तक ऊपर उठाएं और फिर सांस छोड़ते हुए टांगों को धीरे–धीरे सिर के ऊपर से पीछे की ओर ले जाएं। इस दौरान हाथों को कमर से हटाकर जमीन पर सीधा ही रखें। इसके बाद सांस लेते हुए धीरे–धीरे प्रारंभिक अवस्था में आ जाएं।